संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 160
पृष्ठ 8
शनिवार
28 फरवरी 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- शाकाहारी लोग प्रोटीन के लिए...

विचार- ए.आई. शिखर सम्मेलन, खुद को...

खेल- ऐसा हुआ तो बिना जीते भी सेमीफाइनल..

पोस्ट-बजट वेबिनार में बोले पीएम मोदी

हर सुधार और आवंटन विकसित भारत 2047 की दिशा में कदम

नई दिल्ली,एजेंसी। पोस्ट-बजट वेबिनार में पीएम मोदी ने कहा कि हर सुधार और बजटीय आवंटन 'विकसित भारत 2047' की दिशा में कदम है। उन्होंने सुधारों के बेहतर क्रियान्वयन, जमीनी प्रभाव की समीक्षा और पारदर्शिता व गति बढ़ाने के लिए एआई, ब्लॉकचेन व डेटा एनालिटिक्स के उपयोग पर जोर दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पोस्ट-बजट के पहले वेबिनार को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार का हर सुधार और हर बजटीय आवंटन 'विकसित भारत 2047' के लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसलिए, बजट के बाद हर साल होने वाले ये वेबिनार बहुत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि नीतिगत फैसलों का मकसद दीर्घकालिक विकास को गति देना और देश को विकसित

अर्थव्यवस्था की ओर ले जाना है। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले एक दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था ने अभूतपूर्व मजबूती और लचीला रुख दिखाया है। उनके अनुसार, इस अवधि में सरकार ने दृढ़ संकल्प के साथ कई संरचनात्मक और नीतिगत सुधार लागू किए, जिससे आर्थिक ढांचे को मजबूती मिली। 'टेक्नोलॉजी, रिफॉर्म्स एंड फाइनेंस फॉर विकसित भारत' को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सुधारों की रफ्तार बनाए रखने के लिए सिर्फ नीति-निर्माण नहीं, बल्कि बेहतर क्रियान्वयन पर भी उतना ही ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि सुधारों का मूल्यांकन केवल उनके जमीनी प्रभाव के आधार पर होना चाहिए।

पीएम मोदी ने कहा कि रिफॉर्म एक्सप्रेस को बनाए रखने के लिए केवल नीतियों के इरादे पर नहीं, बल्कि बेहतर क्रियान्वयन पर भी उतना ही ध्यान देना होगा। सुधारों का आकलन उनके जमीनी प्रभाव के आधार पर होना चाहिए और पारदर्शिता, गति व जवाबदेही बढ़ाने के लिए एआई, ब्लॉकचेन और डेटा एनालिटिक्स के साथ शिकायत निवारण प्रणाली का उपयोग जरूरी है। मोदी ने कहा कि सरकार की कोशिश व्यवस्था को अधिक पूर्वानुमानित और निवेशकों के अनुकूल बनाने की है। उन्होंने कहा कि बॉन्ड मार्केट सुधारों को दीर्घकालिक आर्थिक सुधारों के सक्षम साधन के रूप में देखा जाना चाहिए। प्रधानमंत्री ने सार्वजनिक पूंजीगत व्यय में बड़े बदलाव की ओर इशारा करते हुए कहा कि 11 वर्ष पहले जहां यह करीब 2 लाख करोड़ रुपये था, वहीं मौजूदा बजट में यह बढ़कर लगभग 12 लाख करोड़ रुपये हो गया है। उन्होंने कहा कि सरकार का इतना बड़ा निवेश निजी क्षेत्र के लिए स्पष्ट संदेश है कि अब उद्योग और वित्तीय संस्थान नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ें। उन्होंने उभरते क्षेत्रों में वित्तपोषण के नए मॉडल और मजबूत सहयोग की जरूरत पर बल दिया व परियोजनाओं में देरी और लागत बढ़ोतरी रोकने के लिए परियोजना स्वीकृति प्रक्रिया और मूल्यांकन की गुणवत्ता मजबूत करने की सलाह दी। साथ ही, पीएम मोदी ने सरकार, उद्योग, वित्तीय संस्थानों और शिक्षाविदों के बीच एक स्पष्ट रिफॉर्म पार्टनरशिप चार्टर बनाने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि बजट पर चर्चा से अधिक जरूरी उसका तेज और सरल क्रियान्वयन है।

एक चरण में तमिलनाडु चुनाव कराने की मांग, सीईसी बोले-

सारी चीजें ध्यान में रखकर लेंगे फैसला

चेन्नई,एजेंसी। मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार ने चेन्नई में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में तमिलनाडु के चुनावी इतिहास और आगामी चुनावों से संबंधित कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला। सीईसी ज्ञानेश कुमार ने कहा कि तमिलनाडु में पार्टियों ने विधानसभा चुनाव एक ही चरण में कराने का सुझाव दिया है और इस पर सभी कारकों पर विचार करने के बाद फैसला लिया जाएगा। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा कि चुनाव आयोग का चुनाव के चरणों को लेकर निर्णय चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के बाद ही पता चलेगा। उन्होंने राज्य के गौरवशाली लोकतांत्रिक अतीत का उल्लेख करते हुए प्राचीन कुडवोलाई प्रणाली का भी जिक्र किया, जो दर्शाता है कि लोकतंत्र की जड़ें तमिलनाडु में कितनी गहरी हैं। सीईसी ज्ञानेश कुमार ने मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का जिक्र कर चुनाव आयोग के पारदर्शी उद्देश्य पर जोर देते हुए कहा कि किसी भी योग्य व्यक्ति को मतदान प्रक्रिया से बाहर नहीं रखा जाएगा और न ही किसी अयोग्य व्यक्ति को शामिल होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग यह सुनिश्चित करेगा कि चुनाव पूरी तरह से निष्पक्ष और पारदर्शी हों। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि तमिलनाडु में सभी 75,000 मतदान केंद्रों पर मतदाताओं को सभी आवश्यक सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।

चुनाव आयोग की ओर से तमिलनाडु विधानसभा चुनाव को और अधिक सुगम और पारदर्शी बनाने के लिए कई नई पहलों की घोषणा की गई। इनमें से एक प्रमुख पहल यह है कि पोस्टल बैलेट की गिनती इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) की मतगणना से दो चरण पहले की जाएगी। इसके अतिरिक्त, यह भी स्पष्ट किया गया कि वीवीपैट की गिनती अनिवार्य रूप से की जाएगी। उन्होंने बताया कि मतगणना समाप्त होने के बाद भी, कोई भी उम्मीदवार एक निश्चित शुल्क का भुगतान करके अगले सात दिनों के भीतर ईवीएम के वोटों का वीवीपैट पर्चियों से मिलान करवा सकता है। यह कदम चुनावी प्रक्रिया में विश्वास और पारदर्शिता को और बढ़ाएगा।

कोई नहीं कर सकता हमारे आदेश का उल्लंघन

बंगाल एसआईआर पर सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी

नई दिल्ली,एजेंसी। 24 फरवरी को सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल के सिविल न्यायाधीशों के अलावा 250 जिला न्यायाधीशों की तैनाती का आदेश दिया। इसके साथ ही झारखंड और ओडिशा से न्यायिक अधिकारियों को राज्य में चल रहे एसआईआर में मतदाता सूची से नाम हटाए जाने का सामना कर रहे 80 लाख लोगों के दावों और आपत्तियों को संभालने की अनुमति दी। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को पश्चिम बंगाल में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) मामले की सुनवाई हुई। इस दौरान सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणी करते हुए कहा कि न तो चुनाव आयोग और न ही राज्य सरकार हमारे आदेशों का उल्लंघन करेगी। सुप्रीम कोर्ट ने ये भी कहा कि हमने स्पष्ट कर दिया है कि

किन दस्तावेजों की जांच की जानी है। हमारे आदेश बिलकुल स्पष्ट हैं। सुप्रीम कोर्ट में पश्चिम बंगाल सरकार की ओर से बताया गया कि चुनाव आयोग ने राज्य में मतदाता सूचियों के एसआईआर में तैनात न्यायिक अधिकारियों के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल जारी किया था। सुप्रीम कोर्ट ने इस पर टिप्पणी की कि वह अपने न्यायिक अधिकारियों को जानता है और वे किसी भी चीज से प्रभावित नहीं होंगे।

पश्चिम बंगाल की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिबल ने मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ के सामने इस मामले का उल्लेख किया। उन्होंने पीठ से कहा, चुनाव आयोग ने पीठ पीछे न्यायिक अधिकारियों को निर्देश जारी किए हैं। एक प्रशिक्षण मॉड्यूल जारी किया है जिसमें कहा गया है कि उन्हें क्या स्वीकार करना चाहिए और क्या नहीं।

केजरीवाल, बोले-

मोदी और शाह ने की बड़ी साजिश, कोर्ट का फैसला ऐतिहासिक

नई दिल्ली,एजेंसी। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने कथित दिल्ली शराब नीति घोटाले से जुड़े केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा दर्ज मामले में दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को बड़ी राहत दी है। कोर्ट ने दोनों को बरी कर दिया है। कोर्ट के फैसले के बाद अरविंद केजरीवाल भावुक हो गए। उन्होंने कहा, मैं भ्रष्ट नहीं हूं। अदालत ने कहा है कि केजरीवाल और मनीष सिसोदिया ईमानदार हैं। मीडिया से बातचीत के दौरान अरविंद केजरीवाल रो पड़े। केजरीवाल ने कहा, पिछले कुछ वर्षों से भाजपा जिस तरह से शराब घोटाले के बारे में कह रही थी और हमारे ऊपर आरोप लगा रही थी तो आज कोर्ट ने सभी आरोप खारिज कर दिए और सभी आरोपियों को बरी कर दिया

है। हमें न्यायपालिका पर भरोसा है। सत्य की जीत हुई। आप को खत्म करने के लिए सभी बड़े नेताओं को जेल में डाल दिया गया था। यह पूरा फर्जी केस था। केजरीवाल भ्रष्ट नहीं है। मैंने अपने जीवन में केवल ईमानदारी कमाई है। कोर्ट ने कहा है कि केजरीवाल, मनीष सिसोदिया और आम आदमी पार्टी कट्टर ईमानदार है। अच्छा काम करके सत्ता में आइए और झूठे केस करके हमें जेल में डालना प्रधानमंत्री को शोभा नहीं देता।

दिल्ली आप अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने कहा, ईडी एक ऐसी संस्था है जो व्हीलचेयर पर है। दिल्ली, पंजाब, गुड़गांव, हैदराबाद, मुंबई, बेंगलुरु में 600 जगहों पर छापेमारी की गई लेकिन कहीं से कोई बरामदगी नहीं हुई। सुप्रीम कोर्ट ने भी कहा कि यह केस एक मिनट भी ट्रायल में नहीं टिकेगा लेकिन बेल नहीं दी। वहां ही साफ हो गया था कि सीबीआई, ईडी के पास सबूत नहीं हैं, इसलिए आज इसे डिस्चार्ज किया गया, इसका मतलब है कि यह केस इस लायक भी नहीं है कि इसमें मुकदमा चल सके। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और आप नेता आतिशी ने शराब नीति मामले में अरविंद केजरीवाल के बरी होने पर कहा, श्आम आदमी पार्टी एक कट्टर ईमानदार पार्टी है, अरविंद केजरीवाल एक कट्टर ईमानदार नेता हैं, मनीष सिसोदिया कट्टर ईमानदार नेता हैं और आज कोर्ट के आदेश ने यह साबित कर दिया कि किस तरह केंद्र सरकार की एजेंसियों ने षड्यंत्र करके बिना ठीक से जांच करके किस तरह से आरोप लगाए, भाजपा का सच आज देश के सामने आ गया।

आप विधायक गोपाल राय ने कहा, न्यायालय ने ऐतिहासिक फैसला दिया है। पहली बार ऐसा हुआ कि चुने हुए मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री को जेल में डाल दिया गया था। सीबीाई ने जो रिपोर्ट कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत की थी, उसमें कोई आधार नहीं है। यह सीबीआई घोटाला हुआ था और एजेंसियों का इस्तेमाल करके सत्ता का दुरुपयोग किया गया था। आज उन सभी षड्यंत्रों का पर्दाफाश हो गया है। वहीं, कोर्ट के इस फैसले के बाद अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने खुशी जताई। उन्होंने एक्स पर पोस्ट में कहा, इस संसार में कोई कितना भी शक्तिशाली हो जाये, शिव शक्ति से ऊपर नहीं हो सकता. सच की हमेशा जीत होती है। अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने कहा, मैं आज भगवान का शुक्रिया अदा करना चाहती हूं। अरविंद जी ने अपनी जिंदगी ईमानदारी से बिताई है। लेकिन इन लोगों (भाजपा) ने अरविंद जी और उनके साथियों को जेल भेज दिया। मुझे भरोसा था कि सच की जीत होगी। मैं उन सभी का शुक्रिया अदा करना चाहती हूं जो हमारे साथ खड़े रहे।

फिल्म पर रोक के बाद बोलीं प्रियंका गांधी

ऐसी चीजें बनाई जाएं जो खुशी और शांति को बढ़ावा दें

वायनाड (केरल),एजेंसी। फिल्म द केरल स्टोरी 2 पर केरल हाईकोर्ट ने रोक लगा दी। कोर्ट के आदेश के बाद फिल्म 27 फरवरी को रिलीज नहीं हो पाई। अब इस पर वायनाड सांसद और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा की भी प्रतिक्रिया आई है। केरल पहुंची प्रियंका गांधी ने कहा कि हालांकि लोगों को अपनी बात कहने की अनुमति दी जानी चाहिए, लेकिन बेहतर होगा कि ऐसी चीजें बनाई जाएं जो लोगों के बीच खुशी और शांति, प्रेम और कल्याण को बढ़ावा दें। वायनाड सांसद प्रियंका गांधी तीन दिन के दौरे पर केरल आई हैं, जहां उन्होंने द केरल स्टोरी 2- की रिलीज पर कोर्ट के स्टे के बारे में मीडिया के सवालों का जवाब दे रही थीं।

अपने बयान में प्रियंका गांधी ने कहा, श्मुझे लगता है कि लोगों को अपनी बात कहने की इजाजत होनी चाहिए। ऐसे माहौल में जो एक-दूसरे के प्रति गुस्से और नफरत से भरता जा रहा है। अगर आप वायनाड को लें तो ये लोग कितनी खूबसूरती से एक साथ रहते हैं, कैसे त्योहार मनाते हैं, कैसे एक-दूसरे की मदद करते हैं और सब कुछ। उन्होंने आगे कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप यहां किस धर्म या जाति से हैं।

यह केरल की स्वभाव है और मुझे लगता है कि यही इस जगह की खूबसूरती है। हम इसके बारे में बात क्यों नहीं करते और इसे क्यों नहीं दिखाते। क्यों न पूरा देश इस उदाहरण से सीखे।

एक साथ चार विधानसभाओं से शुरू होगी भाजपा की परिवर्तन यात्रा, अमित शाह दिखाएंगे हरी झंडी

कोलकाता,एजेंसी। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी ने राज्यभर में 'परिवर्तन यात्रा' निकालने की तैयारी तेज कर दी है। पार्टी के मुताबिक, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह 2 मार्च को इस यात्रा को औपचारिक रूप से हरी झंडी दिखाएंगे। प्रदेश भाजपा से मिली जानकारी के अनुसार, अमित शाह 1 मार्च को रात करीब 10 बजे कोलकाता

एयरपोर्ट पहुंचेंगे। इसके बाद वे प्रदेश नेताओं के साथ बैठक कर चुनावी रणनीति और संगठनात्मक तैयारियों की समीक्षा करेंगे। भाजपा नेताओं के अनुसार, 2 मार्च की सुबह दक्षिण 24 परगना जिले के रायदिघी विधानसभा क्षेत्र से परिवर्तन यात्रा का औपचारिक शुभारंभ होगा। यहां अमित शाह कार्यकर्ताओं और समर्थकों को संबोधित करेंगे। पार्टी सूत्रों का कहना है कि इसी दिन राज्य के चार अलग-अलग विधानसभा क्षेत्रों से चार समानांतर परिवर्तन यात्राएं एक साथ शुरू की जाएंगी। इधर, राज्य पुलिस ने परिवर्तन यात्रा के लिए अनुमति नहीं दी है। इसके बाद भाजपा ने कलकत्ता हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। पार्टी ने 22 फरवरी को संबंधित थानों में अनुमति के लिए आवेदन दिया था, लेकिन मंजूरी नहीं मिलने पर अदालत में याचिका दायर की गई। सूत्रों के अनुसार, जस्टिस शुभ्रा घोष की अदालत में मामले की सुनवाई होने की संभावना है। भाजपा का कहना है कि वह कानूनी प्रक्रिया के तहत अनुमति हासिल कर कार्यक्रम को सफल बनाएगी।

कांग्रेस का पीएम मोदी पर निशाना, कहा-

पीएम के लिए एनसीईआरटी का असली फुल फॉर्म है कुछ और

नई दिल्ली,एजेंसी। एनसीईआरटी की कक्षा आठवीं की सामाजिक विज्ञान की पुस्तक को लेकर जारी विवाद के बीच कांग्रेस ने पीएम मोदी पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने स्वयं पाठ्यपुस्तकों के पुनर्लेखन के लिए नागपुर सांप्रदायिक पारिस्थितिकी तंत्र का मार्गदर्शन और आकार दिया है (नागपुर कम्युनल इकोसिस्टम फॉर रिराइटिंग ऑफ टेक्स्टबुक्स), जो वास्तविक एनसीईआरटी है। पार्टी ने सुप्रीम कोर्ट से इस पूरे मामले की विस्तृत जांच कराने की मांग भी की। कांग्रेस महासचिव (संचार) जयराम रमेश ने आरोप लगाया कि पिछले एक दशक में पाठ्यपुस्तकों में वैचारिक बदलाव किए गए हैं और इन्हें ध्रुवीकरण व राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप

का माध्यम बनाया गया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने ही ऐसे शैक्षणिक तंत्र को दिशा दी है, जिसने पाठ्यपुस्तकों के पुनर्लेखन को आकार दिया। कांग्रेस का यह बयान ऐसे समय आया है जब सुप्रीम कोर्ट ने एनसीईआरटी की कक्षा आठवीं की सामाजिक विज्ञान की पुस्तक के आगे के प्रकाशन, पुनर्मुद्रण और डिजिटल प्रसार पर पूर्ण रोक लगा दी है। शीर्ष अदालत ने पुस्तक में न्यायपालिका पर आपत्तिजनक सामग्री होने पर कड़ी नाराजगी जताते हुए कहा कि इससे संस्थान की गरिमा प्रभावित होती है। सुप्रीम कोर्ट ने मामले को गंभीर मानते हुए पुस्तक की सभी भौतिक और डिजिटल प्रतियों को तत्काल जब्त कर सार्वजनिक पहुंच से हटाने के निर्देश दिए हैं।

विवेचना की खामियां चश्मदीदों के बयानों को झुठला नहीं सकती, दोहरे हत्याकांड में उम्रकैद बरकरार

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने जमीन के विवाद को लेकर पंचायत के दौरान बरेली में 42 साल पहले हुए दोहरे हत्याकांड के दो दोषियों को मिली उम्रकैद पर अपनी मुहर लगा दी। कहा कि विवेचना की खामियां या हत्या में प्रयुक्त हथियार की बरामदगी न होना, चश्मदीदों के ठोस बयानों को झुठला नहीं सकता।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने जमीन के विवाद को लेकर पंचायत के दौरान बरेली में 42 साल पहले हुए दोहरे हत्याकांड के दो दोषियों को मिली उम्रकैद पर अपनी मुहर लगा दी। कहा कि विवेचना की खामियां या हत्या में प्रयुक्त हथियार की बरामदगी न होना, चश्मदीदों के ठोस बयानों को झुठला नहीं सकता। यह फैसला न्यायमूर्ति चंद्रधारी सिंह, न्यायमूर्ति देवेंद्र सिंह प्रथम की खंडपीठ ने दोषी रामचंद्र और बाबू राम की अपील खारिज करते हुए सुनाया है। मामला बरेली के बहेड़ी थाना क्षेत्र के राजपुरा का है। दो जुलाई 1984 की रात जमीन के विवाद को सुलझाने के लिए बुलाई गई पंचायत के दौरान रामचंद्र, बाबू राम ने अपने ही रिश्तेदारों दामोदर और चंद्र पाल पर चाकू–लाठी से हमला कर दिया था। इससे दोनों भाइयों की मौके पर ही मौत हो गई थी।

18 अक्तूबर 1985 को सत्र न्यायालय ने दोनों को दोषी मानते हुए उम्रकैद की सजा सुनाई। इसके खिलाफ दोनों ने 1985 में ही हाईकोर्ट में अपील दाखिल की थी। कोर्ट ने अपील खारिज कर कहा कि 40 साल पहले की घटना को याद करने में मामूली विसंगतियां होना स्वाभाविक है, लेकिन इससे गवाहों की विश्वसनीयता संदिग्ध नहीं हो जाती। कोर्ट ने ट्रायल कोर्ट से मिली उम्रकैद को बरकरार रखते हुए जमानत पर जेल से बाहर रह रहे दोनों दोषियों को तीन हफ्ते में समर्पण करने का आदेश दिया है।

कोर्ट ने फैसले में कहा कि केवल इसलिए कि पुलिस हत्या में प्रयुक्त हथियार (चाकू) बरामद करने में विफल रही, दोषियों को बरी नहीं किया जा सकता। यदि चश्मदीद गवाहों के बयान विश्वसनीय और चिकित्सा रिपोर्ट से मेल खाते हैं तो जांच अधिकारी की लापरवाही या चूक का लाभ आरोपियों को नहीं दिया जा सकता। ऐसा करना न्याय के साथ खिलवाड़ होगा और समाज का न्याय प्रणाली से भरोसा उठ जाएगा।

शुआट्स का कोर्स बंद करने और शिक्षकों की सेवा समाप्ति का आदेश सही

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय (शुआट्स) की ओर से कोर्स बंद करने और शिक्षकों की सेवा समाप्ति के आदेश को सही माना है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय (शुआट्स) की ओर से कोर्स बंद करने और शिक्षकों की सेवा समाप्ति के आदेश को सही माना है। शुआट्स को आदेश दिया है कि वह तीन सप्ताह के भीतर शासन के समक्ष अपना स्पष्टीकरण प्रस्तुत करे। साथ ही न्यायमूर्ति सौरभ श्याम शमशेरी की एकल पीठ ने राज्य सरकार को भी तीन सप्ताह में निर्णय लेने का आदेश दिया है। विवि की ओर से कहा गया कि चार–पांच साल में स्ववित्तपोषित इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों में छात्रों की संख्या 90 प्रतिशत तक घटने से आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया। विभिन्न समितियों की रिपोर्ट, अकादमिक काउंसिल, बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट और बाद में सीनेट की स्वीकृति के बाद मार्च 2025 में कुछ स्ववित्तपोषित इंजीनियरिंग विभागों को समाप्त करने का निर्णय लिया गया। इसके परिणामस्वरूप एक जुलाई 2025 से संबंधित प्रोफेसरों की सेवाएं समाप्त कर दी गईं।

प्रोफेसरों की ओर से दलील दी गई कि पाठ्यक्रम समाप्त करने की प्रक्रिया विधिसम्मत ढंग से नहीं अपनाई गई। सीनेट ने स्वतंत्र निर्णय लेने के बजाय केवल रिपोर्टों पर मुहर लगाई। विवि समग्र रूप से लाभ में है। इसलिए अन्य पाठ्यक्रमों के लाभ से वेतन का भुगतान किया जा सकता था। राज्य सरकार ने भी प्रोफेसरों के पक्ष का समर्थन कर कहा कि उसे अधिनियम–2016 की धारा–42 और 55 के तहत नीतिगत मामलों में निर्देश देने और जानकारी मांगने का अधिकार है। तीन फरवरी 2026 को राज्य ने विश्वविद्यालय के निर्णय पर रोक लगाते हुए प्रोफेसरों को कार्य करने और वेतन देने के निर्देश दिए थे। विश्वविद्यालय ने इसे अधिकार क्षेत्र से बाहर बताते हुए चुनौती दी थी।

कोर्ट ने कहा कि उपलब्ध अभिलेखों से प्रथम दृष्टया पाठ्यक्रम बंद करने की प्रक्रिया में कोई अनियमितता नहीं दिखती। साथ ही सीनेट की ओर से लिए गए निर्णय का अनुमोदन अवैध नहीं है। साथ ही कोर्ट ने कहा कि राज्य सरकार को अधिनियम–2016 के प्रावधानों के तहत स्वतंत्र रूप से जांच करने का अधिकार है कि निर्णय सही तथ्यों पर आधारित था या नहीं। क्योंकि, मामला राज्य के समक्ष विचाराधीन है। इसलिए इस चरण पर अदालत निर्णय के गुण–दोष में नहीं जाएगी।

कोर्ट ने कहा कि विश्वविद्यालय को इस मुद्दे को प्रतिद्वंद्वी की तरह नहीं लेना चाहिए, बल्कि यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रोफेसर पिछले एक दशक से अधिक समय से कार्यरत हैं। यदि परिस्थितियां अनुकूल हों तो उन्हें अन्य पाठ्यक्रमों में समायोजित करने या एकमुश्त मुआवजा या समझौते की योजना पर विचार किया जा सकता है। कोर्ट ने सभी संबंधित रिट याचिकाएं उपरोक्त निर्देशों के साथ निस्तारित कर दीं।

वरासत की जंग– चचेरे भाई की गवाही ने पलटा पासा, हाईकोर्ट ने विधवा का दावा नकारा

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बस्ती जिले के एक दशक पुराने भूमि विवाद में बड़ा फैसला सुनाते हुए कहा कि यदि कोई महिला पति की मृत्यु के बाद पुनर्विवाह कर लेती है तो वह पूर्व पति की संपत्ति पर वरासत का अधिकार खो देती है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बस्ती जिले के एक दशक पुराने भूमि विवाद में बड़ा फैसला सुनाते हुए कहा कि यदि कोई महिला पति की मृत्यु के बाद पुनर्विवाह कर लेती है तो वह पूर्व पति की संपत्ति पर वरासत का अधिकार खो देती है। न्यायमूर्ति चंद्र कुमार राय की एकल पीठ ने जैजुला की याचिका खारिज करते हुए भांजे (हबीबुल्लाह) के पक्ष में वरासत दर्ज करने के बंदोबस्त अधिकारी के फैसले को सही ठहराया। सुनवाई के दौरान अदालत ने पाया कि याची जैजुला ने कोर्ट में कुरान उठाकर यह कहने से इन्कार कर दिया था कि उसने दूसरा निकाह नहीं किया है। कोर्ट ने अपने निर्णय में तल्ख लहजे में कहा मुस्लिम समाज में विधवाएं आमतौर पर चूड़ियां नहीं पहनतीं, लेकिन याची का चूड़ियां पहनना और निकाह के सवाल पर शपथ लेने से कतराना इस बात का पुख्ता संकेत है कि उसने पुनर्विवाह कर लिया था। लिहाजा, वह अपने पहले पति की कानूनी वारिस नहीं रह जाती। मामले में मृतक लियाकत हुसैन के चचेरे भाई मोहम्मद जुबैर की गवाही निर्णायक साबित हुई। उन्होंने कोर्ट को बताया कि लियाकत ने अपनी मृत्यु से पहले ही जैजुला को तलाक दे दिया था, जिसके बाद जुबैर ने खुद उससे निकाह किया और बाद में उसे भी तलाक दे दिया। कोर्ट ने भारतीय साक्ष्य अधिनियम–1872 की धारा 50 का हवाला देते हुए कहा कि जब अदालत को किसी नातेदारी के बारे में राय बनानी हो तो उस व्यक्ति की राय सबसे सुसंगत होती है, जिसे उस परिवार के बारे में विशेष ज्ञान हो।

23 साल से आजीवन कारावास की सजा काट रहा आरोपी बरी, पत्नी व तीन बच्चों की हत्या में मिली थी सजा

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पत्नी और तीन बच्चों की हत्या में दोषी ठहराए गए आरोपी को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया। कोर्ट ने कहा कि यह नृशंस हत्या जरूर है, लेकिन अभियोजन पक्ष ऐसा पुख्ता और विश्वसनीय साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर सका जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि हत्या आरोपी ने ही की।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पत्नी और तीन बच्चों की हत्या में दोषी ठहराए गए आरोपी को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया। कोर्ट ने कहा कि यह नृशंस हत्या जरूर है, लेकिन अभियोजन पक्ष ऐसा पुख्ता और विश्वसनीय साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर सका जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि हत्या आरोपी ने ही की। यह आदेश न्यायमूर्ति सिद्धार्थ और न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय की खंडपीठ ने आरोपी रईस की ओर से दायर आपराधिक याचिका पर दिया। मामला मुरादाबाद जनपद के गजरौला क्षेत्र का है। याची को ट्रायल कोर्ट ने दोषी ठहराया था। वह करीब 23 साल से जेल में था।

अभियोजन के अनुसार 29/30 अगस्त 2003 की रात रईस ने पत्नी और तीन बच्चों की गर्दन पर धारदार हथियार से वार कर हत्या कर दी थी। एफआईआर मृतका के मामा ने दर्ज कराई थी। घटना के समय आरोपी का एक बेटा जीवित बचा था, जिसे अभियोजन ने प्रत्यक्षदर्शी बताया था। ट्रायल कोर्ट ने रईस को हत्या में दोषी ठहराया था। ट्रायल कोर्ट के आदेश के खिलाफ आरोपी ने हाईकोर्ट में अपील दायर की गई थी।

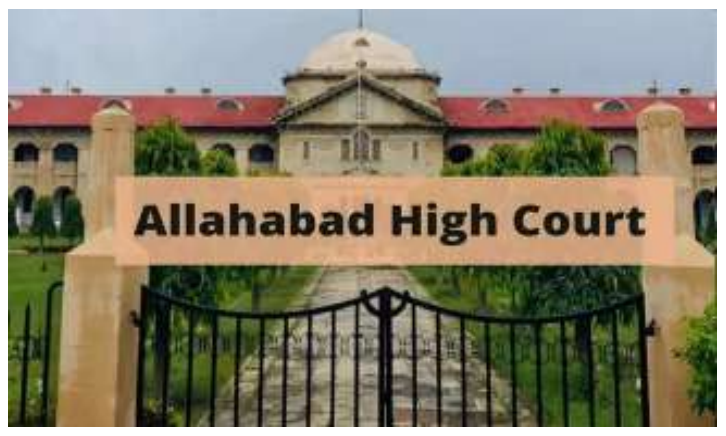

हाईकोर्ट ने कहा कि सूचना देने वाले व्यक्ति का नाम स्पष्ट नहीं किया गया। मृतका के माता–पिता और भाइयों के जीवित होने के बावजूद उन्होंने न तो रिपोर्ट दर्ज कराई, न गवाही दी। जीवित बचे बेटे ने जिरह में स्वीकार किया कि उसे बयान के लिए ट्यूशन (तैयार) कराया गया था। उसने यह भी कहा कि घटना के समय उसके पिता गांव से बाहर भूसा बेचने गए थे। बाद में फोन पर सूचना मिलने पर लौटे। कोर्ट ने कहा कि इन विरोधाभासों से अभियोजन की कहानी संदेहास्पद हो जाती है।

कोर्ट ने कहा कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में गर्दन पर गहरे घाव थे, जिनसे श्वसन नली, अन्न नली और रीढ़ तक कट जाने की बात कही गई। ऐसे घाव किसी भारी धारदार हथियार के प्रतीत होते हैं, जबकि अभियोजन ने सामान्य चाकू से हत्या का दावा किया और गवाह ने चाकू की बरामदगी से इन्कार किया। आरोपी के शरीर पर चोटों और नाखून उखड़े होने के मेडिकल प्रमाण से पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठते हैं।

अभियोजन ने गवाहों के साथ अतिरिक्त न्यायिक स्वीकारोक्ति (एक्स्ट्रा ज्यूडिशियल कंफेशन) का हवाला दिया था। कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का उल्लेख करते हुए कहा कि ऐसी स्वीकारोक्ति कमजोर साक्ष्य होती है। बिना ठोस पुष्टिकरण के उस पर दोषसिद्धि नहीं टिक सकती। गवाहों के बयान दो माह की देरी से दर्ज होने और उनके आरोपी से विशेष निकटता साबित न होने के कारण कोर्ट ने इन्हें अविश्वसनीय माना।

कोर्ट ने कहा याची की सजा वास्तव में अभी खत्म नहीं हुई है। असली कठिनाई उसके जेल से बाहर आने के बाद शुरू होगी। संभव है कि उसके माता–पिता और भाई–बहन अब जीवित न हों। पत्नी और तीन बच्चों की पहले ही मृत्यु हो चुकी है। उसका एक बेटा जिंदा है, जिसकी उम्र अब लगभग 25–26 वर्ष होगी। यह भी निश्चित नहीं है कि वह अपने पिता को अपने घर में स्वीकार करेगा या नहीं। कोर्ट ने आपराधिक न्याय व्यवस्था पर टिप्पणी करते हुए कहा कि ऐसी अपीलों पर निर्णय करना गंभीर और मेहनत भरा कार्य है। न्यायाधीशों की संख्या, स्टाफ और बुनियादी ढांचे में ठोस बढ़ोतरी की आवश्यकता है। केवल बैठकों और सम्मेलनों से स्थिति में सुधार नहीं होगा।

तलवार से सिर कलम करने वाले रहम के हकदार नहीं, पीलीभीत में दोहरे हत्याकांड के दोषी को नहीं मिली राहत

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने चार दशक पहले रंजिश में तलवार से सिर कलम करने के आरोपी को मिली उम्रकैद बरकरार रखी है। कोर्ट ने कहा कि बदला लेने की भावना से की गई ऐसी नृशंस हत्या के लिए कानून में कोई रियायत नहीं है। ऐसे आरोपी रहम के हकदार नहीं है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने चार दशक पहले रंजिश में तलवार से सिर कलम करने के आरोपी को मिली उम्रकैद बरकरार रखी है। कोर्ट ने कहा कि बदला लेने की भावना से की गई ऐसी नृशंस हत्या के लिए कानून में कोई रियायत नहीं है। ऐसे आरोपी रहम के हकदार नहीं है।

यह फैसला न्यायमूर्ति सलिल कुमार राय, न्यायमूर्ति विनय कुमार द्विवेदी की खंडपीठ ने किशनपाल, वीरपाल और अन्य की ओर से दाखिल अपील पर दिया है। यह खूनी संघर्ष 23 अक्तूबर 1987 की सुबह पीलीभीत के बीसलपुर में हुआ था। इंदल प्रसाद भाई राम दयाल संग साइकिल से गांव लौट रहे थे। नहर के पास गन्ने के खेत में घात लगाकर बैठे किशन लाल, भोला नाथ और वीरपाल हथियारों के साथ बाहर निकले। रंजिश का बदला लेने के लिए सभी ने इंदल पर तलवार और कांता (बांके) से ताबड़तोड़ 13 वार किए। हमला इतना भीषण था कि इंदल का सिर धड़ से अलग होकर दूर जा गिरा।

सत्र अदालत ने उन्हें उम्रकैद की सजा सुनाई थी। इसके खिलाफ इन्होंने अपील दाखिल की थी। कोर्ट ने अपील खारिज कर दी। कहा कि हमलावरों का गन्ने के खेत में छिपकर शिकार का इंतजार करना साबित करता है कि यह कोई अचानक हुआ झगड़ा नहीं, बल्कि एक ठंडे दिमाग से रची गई पूर्व नियोजित साजिश थी। जब कई लोग समान इरादे से हमला करते हैं तो हर एक व्यक्ति उस अपराध के लिए समान रूप से जिम्मेदार होता है।

अकेले गवाह की गवाही पर लगी मुहर

मामले में रोचक मोड़ तब आया जब मुख्य गवाहों के मुकर जाने के बावजूद अदालत ने मृतक के भाई (राम दयाल) की गवाही को अटूट माना। कोर्ट ने कहा कि यदि चश्मदीद का बयान प्राकृतिक है। पोस्टमार्टम से उसकी पुष्टि होती है तो दोषियों को सिर्फ इसलिए नहीं छोड़ा जा सकता कि अन्य गवाह डर या दबाव में मुकर गए हैं।

एक महीने में आत्मसमर्पण का अल्टीमेटम

अपील के दौरान मुख्य आरोपी किशन लाल और भोला नाथ की मौत हो चुकी है, जिसके बाद वीरपाल ही एकमात्र जीवित अपीलकर्ता बचा था। कोर्ट ने वीरपाल की जमानत तत्काल रद्द कर उसे एक महीने के भीतर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट पीलीभीत के समक्ष आत्मसमर्पण करने का आदेश दिया है। चेतावनी दी है कि वह सरेंडर नहीं करता तो पुलिस उसे गिरफ्तार कर जेल भेजे।

स्मार्ट प्रीपेड मीटर उपभोक्ताओं को मिलेगी दो फीसदी तक की छूट, विस्तृत दिशा निर्देश जारी

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड (यूपीपीसीएल) ने स्मार्ट प्रीपेड मीटर उपभोक्ताओं के लिए विस्तृत दिशा–निर्देश जारी किए हैं। निगम ने स्पष्ट किया है कि जिन उपभोक्ताओं के विद्युत संयोजन को पोस्टपेड से प्रीपेड में परिवर्तित किया गया है।

उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड (यूपीपीसीएल) ने स्मार्ट प्रीपेड मीटर उपभोक्ताओं के लिए विस्तृत दिशा–निर्देश जारी किए हैं। निगम ने स्पष्ट किया है कि जिन उपभोक्ताओं के विद्युत संयोजन को पोस्टपेड से प्रीपेड में परिवर्तित किया गया है, उनकी जमा सुरक्षा धनराशि (सिक्योरिटी) का समायोजन अंतिम बिल में किया जाएगा।

निर्देशों के अनुसार, स्मार्ट प्रीपेड मीटर के उपभोक्ताओं को निर्धारित विद्युत टैरिफ पर दो प्रतिशत की छूट दी जाएगी। वहीं, यदि प्रीपेड खाते में नकारात्मक बैलेंस हो जाता है और एक माह में भुगतान नहीं किया जाता, तो बकाया पर दो प्रतिशत प्रतिमाह (24 प्रतिशत वार्षिक) की दर से विलंब अधिभार लगाया जाएगा।

पोस्टपेड से प्रीपेड में परिवर्तन की तिथि तक की अवधि का अंतिम बिल उपभोक्ता को जमा करना होगा। यदि किसी उपभोक्ता की सुरक्षा धनराशि शेष रहती है, तो उसे समायोजित कर शेष राशि उपभोक्ता के खाते में जोड़ी जाएगी। उदाहरण के तौर पर, यदि किसी उपभोक्ता की सिक्योरिटी 700 रुपये है और अंतिम बिल 2000 रुपये बनता है, तो सुरक्षा राशि समायोजित कर शेष धनराशि का भुगतान करना होगा। मुख्य अभियंता राजेश कुमार ने कहा कि प्रीपेड स्मार्ट मीटर पूरी तरह मानक के अनुरूप हैं। मीटर तेज चलने की शिकायतें निराधार हैं। स्मार्ट एप से उपभोक्ताओं को खपत, बिल और बैलेंस की पूरी जानकारी मिलती है। निगम ने बताया कि बकाया समायोजन के लिए श्रेणीवार व्यवस्था भी तय की गई है। घरेलू के अलावा अन्य समस्त श्रेणी के उपभोक्ताओं के बकाया को प्रत्येक रिचार्ज पर निर्धारित प्रतिशत के अनुसार समायोजित किया जाएगा, प्रत्येक रिचार्ज पर 25 प्रतिशत राशि बकाया मद में समायोजित होगी।

प्रीपेड व्यवस्था में उपभोक्ता को पहले रिचार्ज कर बिजली का उपयोग करना होगा। रिचार्ज मोबाइल एप, निगम की आधिकारिक वेबसाइट www.uppcl.org तथा डिजिटल भुगतान माध्यमों जैसे पेटीएम, गूगल पे आदि से किया जा सकता है। रिचार्ज की जानकारी और शेष बैलेंस का विवरण एसएमएस व मोबाइल एप के माध्यम से उपलब्ध रहेगा।

उपभोक्ताओं को प्रीपेड बैलेंस की जानकारी एसएमएस के माध्यम से दी जाएगी। बैलेंस कम होने पर अलर्ट संदेश भेजा जाएगा और शून्य होने से पहले तीन बार सूचना दी जाएगी। मीटर रीडिंग की जानकारी भी उपभोक्ता मोबाइल ऐप और वेबसाइट पर देख सकेंगे। निगम ने यह भी स्पष्ट किया है कि सुबह छह से आठ बजे के बीच, ग्रेस पीरियड के दौरान, इमरजेंसी क्रेडिट अवधि में तथा सार्वजनिक अवकाश एवं रविवार को प्रीपेड कनेक्शन नहीं काटा जाएगा। मीटर परिवर्तन के बाद प्रारंभिक 30 दिनों तक विशेष सुविधा भी दी जाएगी।

धोखाधड़ी और जालसाजी से जुड़े मामले में विवेचक व एसीपी तलब

प्रयागराज। मो. वसीम के खिलाफ फूलपुर थाने में मुकदमा दर्ज है, जिसमें धोखाधड़ी और जालसाजी समेत गंभीर धाराएं लगाई गई हैं। अभियोजन के अनुसार मोहम्मद वसीम मातृ–पितृ सहयोग एग्रोटेक लिमिटेड नामक कंपनी का एजेंट था।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने धोखाधड़ी और जालसाजी से जुड़े मामले में सुनवाई करते हुए पुलिस की कार्यप्रणाली पर असंतोष जताया है। मामले में विवेचक और सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) को व्यक्तिगत रूप से तलब किया है। यह आदेश न्यायमूर्ति अरुण कुमार सिंह देशवाल की एकल पीठ ने मो.वसीम की ओर से दायर जमानत अर्जी पर सुनवाई करते हुए दिया।

मो. वसीम के खिलाफ फूलपुर थाने में मुकदमा दर्ज है, जिसमें धोखाधड़ी और जालसाजी समेत गंभीर धाराएं लगाई गई हैं। अभियोजन के अनुसार मोहम्मद वसीम मातृ–पितृ सहयोग एग्रोटेक लिमिटेड नामक कंपनी का एजेंट था। आरोप है कि उसने पीड़ित और उसके परिवार को कंपनी में निवेश के लिए प्रेरित किया, जिस पर छह लाख रुपये जमा कराए गए। कंपनी की ओर से रसीद और बॉन्ड भी जारी किए गए थे। बाद में कंपनी का कार्यालय बंद हो गया और उसका निदेशक फरार हो गया। इसके बाद पीड़ित पक्ष की शिकायत पर एफआईआर दर्ज की गई।

इससे पूर्व 11 फरवरी को सुनवाई के दौरान बचाव पक्ष की ओर से अधिवक्ता ने दलील दी थी कि धन का दुरुपयोग कंपनी स्तर पर हुआ, जबकि पुलिस ने न तो कंपनी की भूमिका की गंभीरता से जांच की और न ही उसके निदेशक की गिरफ्तारी का प्रयास किया। जिस पर कोर्ट ने कंपनी और उसके निदेशक के खिलाफ जांच की प्रगति रिपोर्ट मांगी थी। साथ ही इस मामले में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जानकारी प्रस्तुत करने का आदेश दिया था। कोर्ट के समक्ष अभियोजन की ओर से दायर अनुपालन हलफनामा रिकॉर्ड पर लिया गया। वहीं, आवेदक पक्ष के अधिवक्ता ने दलील दी कि 16 फरवरी 2026 को कंपनी के निदेशक का नाम और पता पुलिस को उपलब्ध करा दिया गया था। इसके बावजूद अब तक उसकी जांच नहीं की गई। कोर्ट ने सोरांव के सहायक पुलिस आयुक्त की ओर से प्रस्तुत रिपोर्ट का अवलोकन करने के बाद पाया कि छह फरवरी के बाद से जांच में कोई प्रगति नहीं हुई है। इस पर कोर्ट ने 27 फरवरी को सुबह 10 बजे विवेचक और एसीपी को व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने का आदेश दिया है।

कलमबंद बयान पत्थर की लकीर, नहीं बदल सकते बार–बार, दोबारा बयान दर्ज कराने की मांग खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि मजिस्ट्रेट के सामने दर्ज पीड़िता का बयान (कलमबंद बयान) पत्थर की लकीर है। इसे महज आरोपों के आधार पर बार–बार बदला नहीं जा सकता। लिहाजा, मजिस्ट्रेट को दोबारा बयान दर्ज करने का आदेश नहीं दिया जा सकता। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि मजिस्ट्रेट के सामने दर्ज पीड़िता का बयान (कलमबंद बयान) पत्थर की लकीर है। इसे महज आरोपों के आधार पर बार–बार बदला नहीं जा सकता। लिहाजा, मजिस्ट्रेट को दोबारा बयान दर्ज करने का आदेश नहीं दिया जा सकता।

इस टिप्पणी के साथ न्यायमूर्ति राजीव गुप्ता और न्यायमूर्ति अचल सचदेव की खंडपीठ ने आजमगढ़ की पीड़िता की याचिका खारिज कर दी।आजमगढ़ के रानी सराय थाने में दर्ज एक मुकदमे की पीड़िता ने हाईकोर्ट से गुहार लगाई थी कि निचली अदालत के आदेश के क्रम में उसका बयान दोबारा दर्ज कराया जाए। उसने दावा किया था कि पहले दर्ज बयान में प्रक्रियागत खामियां थीं। आरोप लगाया कि मजिस्ट्रेट ने उसका बयान सही तरह से दर्ज नहीं किया और उसे पढ़कर भी नहीं सुनाया गया। कोर्ट ने यह मांग सिरे से खारिज कर दी।

कोर्ट ने कहा कि धारा–183 बीएनएनएस के तहत मजिस्ट्रेट के सामने दर्ज बयान की अपनी एक पवित्रता और कानूनी गरिमा है। अगर हर मामले में पीड़िता के यह कहने भर से कि बयान सही नहीं लिखा गया, दोबारा दर्ज करना शुरू कर दिया गया तो यह कानूनी प्रक्रिया का मजाक होगा। असाधारण परिस्थितियों को छोड़कर, यह बयान केवल एक बार ही दर्ज किया जाता है।

हाईकोर्ट ने क्यों ठुकराई मांग

कोर्ट ने जब मजिस्ट्रेट की ओर से दर्ज मूल बयान की प्रमाणित कॉपी देखी तो पाया कि पीड़िता ने बयान के नीचे खुद हस्ताक्षर किए थे। उसमें स्पष्ट लिखा था कि पीड़िता ने बयान स्वयं पढ़ा है। मजिस्ट्रेट ने प्रमाणित किया था कि बयान बिना किसी दबाव या डर के दिया गया है।

त्योहारों पर गोकशी सिर्फ कानून ही नहीं, लोक व्यवस्था पर भी हमला

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि व्यक्ति की स्वतंत्रता बेशक जरूरी है, लेकिन त्योहारों व धार्मिक रूप से संवेदनशील मौकों पर गोकशी जैसी घटनाएं केवल साधारण अपराध ही नहीं, बल्कि समाज के अमन–चौन और लोक व्यवस्था पर हमला है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि व्यक्ति की स्वतंत्रता बेशक जरूरी है, लेकिन त्योहारों व धार्मिक रूप से संवेदनशील मौकों पर गोकशी जैसी घटनाएं केवल साधारण अपराध ही नहीं, बल्कि समाज के अमन–चौन और लोक व्यवस्था पर हमला है। समाज की धार्मिक भावनाओं को आहत करने वालों के खिलाफ सख्ती से पेश आना सरकार का अधिकार है। इस टिप्पणी के साथ न्यायमूर्ति चंद्रधारी सिंह और न्यायमूर्ति देवेंद्र सिंह प्रथम की खंडपीठ ने जालौन के कालपी निवासी सिकंदर, सैय्यज अली और हसनैन की बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाएं खारिज कर उनके खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत की गई कार्रवाई को जायज ठहराया है। कहा कि आरोपियों को जमानत मिलने पर दोबारा ऐसी घटना होने की आशंका प्रबल थी। लिहाजा, तीनों को एक साल तक जेल में ही रहना होगा।

मामला 30 मार्च 2025 की घटना से जुड़ा है। उस दिन चैत्र नवरात्र का पहला दिन था। अगले ही दिन ईद थी। पुलिस ने कालपी की झाड़ियों में छापा मारकर मांस और हथियार बरामद किए थे। जालौन के डीएम ने अपनी रिपोर्ट में बताया था कि इस घटना से पूरे इलाके में भय माहौल था। लोग मवेशियों को घरों से बाहर निकालने में डरने लगे थे। स्थिति इतनी तनावपूर्ण हो गई थी कि प्रशासन को दंगा नियंत्रण अभ्यास तक करना पड़ा था। अदालत ने अपने 54 पन्नों के फैसले में कहा कि जब कोई कृत्य अपनी प्रकृति में इतना क्रूर हो और उसका समय इतना सटीक हो कि वह एक बड़े समुदाय की धार्मिक भावनाओं को उनके सबसे पवित्र क्षणों में आहत करे तो वह लोक व्यवस्था को छिन्न–भिन्न करने की क्षमता रखता है। ऐसे में शरारती तत्वों की हिरासत न सिर्फ प्रशासनिक कार्रवाई है, बल्कि सामाजिक सद्भाव को बचाने का कर्तव्य बन जाता है। कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का हवाला देते हुए इवेन टेम्पो ऑफ लाइफ (जीवन का सामान्य प्रवाह) का जिक्र किया। कहा कि यदि किसी कृत्य से समाज का सामान्य प्रवाह रुक जाए और लोग असुरक्षित महसूस करने लगें तो वह लॉ एंड ऑर्डर की परिधि से बाहर निकलकर पब्लिक ऑर्डर का मामला बन जाता है।

अधिवक्ता राशिद अली को LIC ने मुकदमों की वकालत और कानूनी सलाह के लिए पैनल में शामिल किया

प्रयागराज। भारतीय जीवन बीमा निगम(एलआईसी) ने अपने पैनल में सक्षम और अनुभवी अधिवक्ताओं को शामिल किया है। जिसमे अधिवक्ता राशिद अली को मुकदमों की वकालत और कानूनी सलाह के लिए पैनल में शामिल किया गया है, जो कानूनी क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाता है,ये सुचना उनको 23/2/2026 को एलआईसी के प्रभारी अधिकारी विधि के द्वारा पत्र भेज कर दिया गया। राशिद अली की नियुक्ति पर इलाहबाद उच्च न्यायालय और अधीनस्थ न्यायालय के कई प्रमुख अधिवक्ताओं ने उन्हें बधाई दी है।

तहसील 12 प्रांगण में कवि सम्मेलन एवं होली मिलन समारोह संपन्न

प्रयागराज। उप जिलाधिकारी प्रेरणा गौतम तथा रोशनी सोलंकी को एवं अधिवक्ता समूह के बीच होली मिलन समार एवं अधिवक्ता समूह के बीच होली मिलन समारोह परंपरागत ढंग से मनाया गया जी स जिस में अप पी जिला अप पी जिला अधिकारी के द्वारा कवियों को अंग वस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

श्रीमान जी राष्ट्रीय कवि संगम काशी प्रांत के उपाध्यक्ष श्री

शंभू नाथ त्रिपाठी अंशुल जी ,श्री जितेंद्र मिश्र जलज जी, श्री देवेंद्र प्रसाद द्विवेदी तथा निखिलेश मालवीय आदि कवियों ने होली के गीत के माध्यम से हास्य एवं व्यंग । वातावरण पैदा कर दिया। कार्यक्रम का संचालन अधिवक्ता श्री गया प्रसाद त्रिपाठी ने किया।

कवियों का स्वागत अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र यादव जी ने तथा महामंत्री श्री अनिल द्विवेदी ने किया। कवियों का संचालन श्री राजेंद्र शुक्ल नेहास्य विनोद के साथ करते हुए समा बांध दिया। रंग गुलाल से प्रांगण रंगीन हो गया होली मिलन समारोह का आयोजन श्री प्रदीप द्विवेदी ने किया।

केन्द्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन
1, नवाब युसुफ मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज-211001

अधिसूचना संख्याः E/CORE/1/19/Engagement/2015 दिनांकः 12.02.2026

अधिसूचना

केन्द्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन अपने मुख्यालय/प्रयागराज एवं रेल विद्युतीकरण/सिकन्दराबाद में मुख्य विधि सहायक के 02 पद को संविदा आधार पर सेवानिवृत्त कर्मचारियों द्वारा पुनर्नियोजित करना चाहती है। पात्रता शर्तें, आवश्यक योग्यता, अनुभव, पारिश्रमिक आदि का विस्तृत विवरण संगठन की वेबसाईट www.indianrailways.gov.in पर उपलब्ध है।

पी.आर./01/2026/अनु वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी/के.रे.वि.सं./प्रयागराज

उत्तर मध्य रेलवे

टेण्डर संख्या-230-वि0/कर्षवि0/प्रयागराज/ई-टेण्डर/2026/619 दिनांकः 26.02.2026

ई-निविदा सूचना

वरिष्ठ मण्डल विद्युत अभियन्ता/कर्षवि0/उमध्रे0/प्रयागराज, द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से निम्न कार्य हेतु ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। जिनका विवरण निम्न प्रकार है।

निविदा सं0ः 230-कर्षवि0-कार्य ठेका-1008-2026

कार्य का विवरणः प्रयागराज मंडल में करंट कलेक्शन टेस्ट हेतु रूट डेटा मैपिंग कार्य, जिसके माध्यम से TDMS एप्लिकेशन द्वारा फुट पेट्रोलिंग की मॉनिटरिंग एवं ट्रैकिंग की जा सके।

अनुमानित लागतः रू0 39,55,061.22 | बिड सुरक्षा राशिः रू0. 79,100.00

कार्य अवधिः 06 महीना | बोली प्रणालीः एक पैकेट

निविदा बन्द होने की तिथि तथा समयः 20.03.2026, 14:00 बजे

निविदा खुलने की तिथि तथा समयः 20.03.2026, 15:00 बजे

नोटः- 1. उपरोक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण (निविदा प्रपत्र सहित) वेबसाइट www.ireps.gov.in पर निविदा खोलने की तिथि से 21 दिन पहले से उपलब्ध होगा। 2. उपरोक्त निविदा में ई-बिड के अलावा किसी अन्य रूप में बिड स्वीकार नहीं की जायेगी। इस प्रयोजन हेतु वेन्डरों को चाहिए कि वे अपने आपको डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र के साथ IREPS की वेबसाइट पर पंजीकृत करायें। 3. किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के समाधान के लिए IREPS की वेबसाइट की हेल्प लाइन से सम्पर्क किया जा सकता है। 450/26 (ADM)

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR

प्रयागराज-हडपसर होली विशेष रेलगाड़ी का संचालन

भारतीय रेल द्वारा अपने सम्मानित रेल यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए होली विशेष रेलगाड़ी के संचालन का निर्णय लिया गया है, जिसका विवरण निम्नवत् हैः-

गाड़ी सं. 04107/04108 प्रयागराज-हडपसर (साप्ताहिक) विशेष रेलगाड़ी

04107 प्रयागराज-हडपसर			04108 हडपसर-प्रयागराज	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
(बुध.)	10:20	प्रयागराज	06:30	(शनि)
11:18	11:20	शंकरगढ़	04:13	04:15
11:45	11:47	डभौरा	03:33	03:35
12:50	12:55	मानिकपुर	03:10	03:15
13:45	13:47	चित्रकूट धाम कर्वी	01:55	01:57
15:15	15:20	बाँदा	00:35	00:40
16:18	16:20	महोबा	23:18	23:20
17:30	18:00	खजुराहो	21:20	21:50
18:14	18:16	दरियागंज	20:50	20:52
18:32	18:34	छतरपुर	20:30	20:32
19:33	19:35	टीकमगढ़	19:10	19:12
21:03	21:05	ललितपुर	18:18	18:20
23:35	23:40	बीना	16:45	16:50
(गुरु)02:00	02:05	रानी कमलापति	14:15	14:20
03:35	03:45	इटारसी जं.	12:20	12:30
08:10	08:15	भुसावल जं.	07:35	07:40
10:45	10:50	मनमाड जं.	04:20	04:25
11:54	11:56	कोपरगांव	03:06	03:08
12:42	12:44	बेलापुर	02:06	02:08
14:00	14:02	अहिल्यानगर	(शुक्र.)01:00	01:02
16:05	16:10	दौंड कॉर्ड लाइन	23:45	23:50
19:30	(गुरु.)	हडपसर	(गुरु.)	22:40

प्रयागराज से- गाड़ी सं. 04107 (बुधवार) दिनांक- 04.03.2026 से 25.03.2026 तथा हडपसर से- गाड़ी सं. 04108 (गुरुवार) दिनांक- 05.03.2026 से 26.03.2026 संरचनाः सामान्य श्रेणी-07, स्लीपर श्रेणी-08, वाता. तृतीय श्रेणी-02, वाता. द्वितीय श्रेणी-01

नोट : ट्रेनों की समय-सारणी के सम्बंधित जानकारी हेतु हेल्पलाइन 139 या Rail madad Mobile App या वेबसाइट railmadad.indianrailways.gov.in का प्रयोग करें।

उत्तर मध्य रेलवे

@CPRONCR North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in 465/26 FA

लोकपाल ने लगाई उमरपुर ग्राम पंचायत भवन पर चौपाल

सुनी समस्याएं किया समाधान, शिकायत कर्ता के ग्राम में न होने पर लोकपाल ने किया कैंप, शाम को घर आने पर पूछा उनका पक्ष, दी सख्त हिदायत

ग्राम पंचायत से सार्वजनिक अपेक्षा व भागीदारी ही जिम्मेदार नागरिक का दायित्व- लोकपाल

प्रतापगढ। लोकपाल समाज शेखर नें लक्ष्मणपुर ब्लाक के उमरपुर ग्राम पंचायत में चौपाल लगाकर ग्राम वासियों की समस्याओं को सुना और समाधान के आवश्यक निर्देश दिया। ग्राम चौपाल में शिकायत कर्ता राम उजागिर पुनः उपस्थित नही हो सके जिस पर लोकपाल ने ग्राम में ही मुरली बाबा के प्राचीन स्थल सहित ग्राम का भ्रमण किया। शाम को शिकायत कर्ता के घर आने पर ग्राम वासियों के साथ राम उजागिर से लोकपाल ने उनका पक्ष सुना और अन्य तथ्यों पर उनका बयान लिया गया।

लोकपाल ने प्रथम दृष्ट्या पाया कि प्रधान पति और शिकायतकर्ता के बीच व्यक्तिगत लेन देन है जिसके कारण ग्राम पंचायत से जुड़े कार्यो की शिकायत की जा रही है। ऐसे में लोकपाल ने शिकायतकर्ता व प्रधान प्रतिनिधि को सख्त हिदायत दी की ग्राम पंचायत के कार्य में सार्वजनिक भागीदारी ही नागरिकों का दायित्व है निजी लाभ व व्यक्तिगत स्वार्थ की मंशा से पंचायत के कार्य में निभाई गई जिम्मेदारी सामाजिक अपयश का व कानून अनुचित व दंडनीय कार्य है। लोकपाल ने इसकी पुनरावृत्ति न होने की हिदायत देते हुए सबके भले के कार्य को बढ़ावा देने में अपनी जिम्मेदार भूमिका निभाने का ग्राम वासियों से आवाहन किया।

लोकपाल समाज शेखर सर्व प्रथम ग्राम पंचायत भवन पहुँच कर ग्राम चौपाल में प्रतिभाग कर मनरेगा, पी एम आवास सहित ग्राम की सभी प्राथमिक समस्याओं को सुना और समाधान के आवश्यक निर्देश

संबंधितो को दिया। प्रारंभ में ही ग्राम विकास अधिकारी अभिषेक यादव व महिला मेट महिमा ने लोकपाल को पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। लोकपाल ने राम उजागिर द्वारा की गई शिकायत के समस्त 3 कार्यक्रम/ बिंदुओं के तकनीकी जांच व अपेक्षित कार्यवाही का निर्देश सम्बन्धित बीडीओ व अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी को दिया। अर्पित मिश्र सहित ग्राम वासियों की मांग पर मुरली बाबा स्थान के विकास, प्रकाश व मार्ग की सुव्यवस्था हेतु ग्राम पंचायत व विकास खंड कार्यालय को निर्देश दिया। पूरे मुरली के प्राचीन कुंये को संरक्षित व विकसित करने का निर्देश ग्राम पंचायत को दिया।

लोकपाल ने ग्राम पंचायत के पूरे मुरली का व्यापक भ्रमण किया। प्राचीन महत्व के स्थल मुरली बाबा चौरा का ग्राम वासियों के साथ पूजन दर्शन किया गया। ग्राम वासियों ने बताया कि ग्राम पूरे मुरली के प्राचीन नाले के पुनरोद्धार की माँग की, बताया की सफाई न होने के कारण रास्ते अवरुद्ध है बरसात में गाँव के रिहायशी इलाके व खेतों को भारी नुकसान होता है। वहीं दर्ज प्राचीन रास्ता बन्द होने की भी शिकायत की जिस पर लोकपाल ने जिलाधिकारी महोदय से राजस्व व विकास विभाग द्वारा उक्त आवश्यक कार्य बरसात से पूर्व कराये जाने की संस्तुति करने का निर्णय लिया।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से ब्लाक तकनीकी सहायक अवधेश पटेल, शिव मुनि दूबे, प्रधान प्रतिनिधि कमलेश कुमार के के पासी व भाजयुमो मंडल अध्यक्ष शेष नाथ मिश्र, पुष्पा कोरी, अनिल कुमार सरोज, विजय बहादुर यादव, सुरेश चंद्र मिश्र, शिव टहल गौतम, अजय मिश्र, विवेक मिश्र, सुमित मिश्र, गीता मौर्य, सोनी, राधा पांडे, रमेश चंद्र मिश्र, दया शंकर, राम नारायण मिश्र, हुबराजी, प्रेमा, राजकली, सूरजसती, हरिश्चन्द्र आदि बड़ी संख्या में ग्राम वासियों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर सीएमपी डिग्री कॉलेज में विविध कार्यक्रमों का आयोजन

प्रयागराज। सीएमपी डिग्री कॉलेज में 25 से 27 फरवरी 2026 तक राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर "AI in Science & Technology" विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन एवं विभिन्न शैक्षणिक प्रतियोगिताओं का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संयुक्त आयोजन आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ एवं इंस्टीट्यूट इनोवेशन सेल द्वारा विज्ञान संकाय के सहयोग से किया गया।कार्यक्रम के सफल आयोजन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अजय प्रकाश खरे का विशेष मार्गदर्शन एवं प्रेरक नेतृत्व अत्यंत सराहनीय रहा। उनके कुशल प्रशासनिक निर्देशन में समस्त कार्यक्रम सुव्यवस्थित एवं प्रभावी ढंग से संपन्न हुए।

आईक्यूएसी की समन्वयक प्रो. सरिता श्रीवास्तव ने आयोजन की रूपरेखा तैयार करने, विभिन्न विभागों के मध्य समन्वय स्थापित करने तथा शैक्षणिक गुणवत्ता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहीं इंस्टिट्यूट इनोवेशन सेल की संयोजक प्रो. अर्चना पाण्डेय ने नवाचार एवं तकनीकी विषयों को कार्यक्रम का केंद्र बिंदु बनाते हुए छात्र–छात्राओं को नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान किया। विभागीय समन्वयकों डॉ. आलोक कुमार सिंह एवं डॉ. दीपक कुमार गोंड विजय प्रताप सिंह ने आयोजन की संपूर्ण व्यवस्थाओं का कुशल संचालन किया।साथ ही रसायन विज्ञान विभाग की समन्वयक डॉ. हिमानी चौरसिया, गणित विभाग के

समन्वयक डॉ. श्वेताभ श्रीवास्तव तथा प्राणी विज्ञान विभाग की समन्वयक डॉ. हेमलता पंत का योगदान अत्यंत प्रशंसनीय रहा। इनके सतत प्रयासों से विज्ञान प्रश्नोत्तरी, वाद–विवाद प्रतियोगिता (।प्रू । ठववद वत ंब्नतेम जव वबपमजल), पोस्टर प्रतियोगिता, मौखिक प्रस्तुति तथा पुष्प प्रदर्शनी जैसे कार्यक्रम अत्यंत सफल एवं आकर्षक रहे।

साथ ही विभिन्न विभागों के समन्वयकों एवं शिक्षकों का योगदान भी उल्लेखनीय रहा, जिनके सामूहिक सहयोग से कार्यक्रम को भव्य रूप मिला।

25 फरवरी को विभिन्न विभागों द्वारा शैक्षणिक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय था दृ "।प्रू समाज के लिए वरदान या अभिशाप"।

वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा मौखिक प्रस्तुति (व्तंस च्तमेमदजंजपवद) प्रतियोगिता एवं आकर्षक फ्लॉवर शो आयोजित किया गया।

रसायन विज्ञान विभाग द्वारा पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें विद्यार्थियों ने विज्ञान एवं तकनीक में ।प् के अनुप्रयोग को रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया।

गणित विभाग द्वारा विज्ञान प्रश्नोत्तरी (फनप्र) प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया।

क्६। विभाग द्वारा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें ।प् के वर्तमान एवं भविष्यगत आयामों पर प्रकाश डाला गया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के मुख्य व्याख्यान में मुख्य वक्ता डॉ. मृदुला त्रिपाठी ने "विज्ञान दिवस की थीम" पर विस्तृत व्याख्यान देते हुए विज्ञान एवं तकनीकी विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए।

यह समस्त कार्यक्रम अथर्वन एवं थ्ब्म् के सहयोग से संपन्न हुआ। कार्यक्रम के अंतर्गत आज सायंकाल अथर्वन की ओर से डॉ. कंचन मिश्रा द्वारा छात्र–छात्राओं को बैग वितरण किया गया, जिससे विद्यार्थियों में विशेष उत्साह देखा गया।

कार्यक्रम में महाविद्यालय प्रशासन, विभिन्न विभागों के समन्वयकों, प्राध्यापकों एवं बड़ी संख्या (250)में छात्र–छात्राओं की सक्रिय सहभागिता रही। तीन दिवसीय इस आयोजन ने विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, नवाचार एवं अनुसंधान के प्रति रुचि को प्रोत्साहित किया।कार्यक्रम के आखिरी दिन विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कृत किया गया ।

कार्यक्रम का समापन उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ तथा आयोजकों ने सभी प्रतिभागियों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।कार्यक्रम के दौरान वनस्पति विज्ञान विभाग के समन्वक डॉक्टर मंजू श्रीवास्तव डॉक्टर संजय सिंह डॉ मीना राय डॉक्टर यशवंत कुमार डॉ अविनाश प्रताप सिंह डॉक्टर पल्लवी राय डॉक्टर हेमलता पंत डॉक्टर ज्योति वर्मा डॉक्टर आशीष मिश्रा डॉक्टर मनोज जायसवाल आदि उपस्थित रहे।

होली पर योगी सरकार का तोहफा, सभी कर्मचारियों का वेतन जारी करने के निर्देश, 3 मार्च को छुट्टी का ऐलान

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को अधिकारियों को निर्देश दिया कि होली से पहले सभी सरकारी कर्मचारियों का वेतन जारी कर दिया जाए और उन्होंने चेतावनी दी कि इस संबंध में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। सिंगापुर और जापान की चार दिवसीय यात्रा से लौटने के तुरंत बाद मुख्यमंत्री ने प्रशासन को कई निर्देश जारी करते हुए कहा कि होली से पहले सभी सरकारी कर्मचारियों का वेतन भुगतान सुनिश्चित किया जाए। अधिकारियों के अनुसार, उन्होंने अनुबंधित कर्मचारियों, संविदा कर्मचारियों और स्वच्छता कर्मियों का वेतन भी त्योहार से पहले जारी करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने 28 फरवरी 2026 (शनिवार) को कार्यदिवस घोषित किया। अधिकारियों ने बताया कि कर्मचारियों को तीन मार्च 2026 को अवकाश दिया जाएगा। साथ ही, दो, तीन और चार मार्च को होली के अवकाश रहेंगे। मुख्यमंत्री ने निर्देशों के क्रियान्वयन में किसी भी

तरह की ढिलाई न बरतने को कहा। आधिकारिक बयान के अनुसार, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी विदेश यात्रा के दौरान 1.5 लाख करोड़ रुपये के समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए और 2.5 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त किए।

फागुन–मिष्टान्न

(छप्पय)

गुझिया का है आदि 'करणिका' से है वंदित।
संस्कृत में यह नाम ग्रंथ में है अति व्यंजित।
मेवा और मकरंद भरे अंतस में अपने।
चखकर जिसे जबान मस्त हो लगे थिरकने।
फागुन की भरकर चहक मीठी–मीठी बात कर।
मोहित सबको कर रही प्रेम भरा उत्पात कर।।

अंतस भरे मिठास रंग जो धोला करते।
है फागुन–मिष्टान्न उसी को गुझिया कहते।
आटे का है जिस्म सोंठ– गुड़ जिसके अंदर।
थोड़ा सा सह धूप तेल में पके निरंतर।
जीवन रंग वसंत में भरकर प्रेम मिठास को।
अनुवेदन का सार बन जगा रही विश्वास को।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

गंगानाथ झा परिसर में छात्र सम्मेलन आयोजन

प्रयागराज। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भारतीय ज्ञान परम्परा केन्द्र, गङ्गानाथ झा परिसर, प्रयागराज, एवं प्रयागराज की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से परिसर के प्रांगण में भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध आयाम एवं उनके प्रसार के उपाय विषय पर छात्र सम्मेलन का आयोजन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में नागरिक सुरक्षा विभाग के राम जी तिवारी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इलाहाबाद विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग के डॉ तेज प्रकाश चतुर्वेदी एवं एन एस एस , इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ गुलाब सिंह ने अपने विचारों द्वारा छात्र छात्राओं को लाभान्वित किया। संस्कृत गंगा के सर्वज्ञ नारायण छात्र छात्राओं को उचित सुझाव दिए जिसका छात्र छात्राओं ने स्वागत किया।

सम्मेलन की अध्यक्षता परिसर के निदेशक प्रो. ललित कुमार त्रिपाठी ने किया। प्रयागराज के विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सम्मेलन में भाग लिया। छात्र–छात्राओं के भविष्य की योजनाओं एवं उनके क्रियान्वयन पर विस्तृत रूप से मार्गदर्शन किया गया। भारतीय ज्ञान परम्परा की अतिविस्तृत एवं समृध्द परम्परा से छात्र–छात्राओं को परिसर के निदेशक प्रो. ललित कुमार त्रिपाठी, सह निदेशक प्रो. देवदत्त सरोदे एवं पाण्डुलिपि तथा पुरालिपि विभाग की अध्यक्षा प्रो. अपराजिता मिश्रा द्वारा अवगत कराया गया। छात्र–छात्राओं के मुख से उनके भविष्य के सपने सुनकर उन्हें यथार्थ रूप में परिणत करने को उद्यत उनके प्रयासों की प्रो. ललित कुमार त्रिपाठी द्वारा भूरि भूरि प्रशंसा की गई। प्रो. देवदत्त सरोदे ने प्राचीन समय में हमारे ऋषियों मुनियों ने अपना जीवन किस प्रकार ज्ञानार्जन हेतु समर्पित किया एवं लोक कल्याण के लिए अपने जीवन को समर्पित किया इन तथ्यों से परिचित कराया। कार्यक्रम का संचालन अंकित मिश्र द्वारा किया गया। संचालक प्रो. अपराजिता मिश्रा ने किया। इस अवसर पर प्रो जनार्दन प्रसाद पाण्डेय मणि, प्रो. रामकृष्ण पाण्डेय "परमहंस", डॉ. सुरेश पाण्डेय, डॉ राजकुमार मिश्रा, संजय मिश्र सहित परिसरीय अधिकारी, कर्मचारीगण एवं छात्र–छात्राएँ समुपस्थित रहे।

एनयूजे प्रयागराज ने आजाद प्रतिमा पर मालायर्पण कर दी श्रदाजँली

देशहित तथा निषपक्ष पत्रकारिता ही सच्ची श्रदाजँली: कुन्दन श्रीवास्तव

प्रयागराज। आज नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट इंडिया के प्रयागराज जिला इकाई ने देश के आजादी के आन्दोलन के महानायक माँ भारती के बीर सपूत शहीद चंद्रशेखर आजाद को अपनी श्रदा सुमन अर्पित कर श्रदाजँली दी। नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट इंडिया प्रयागराज के जिला इकाई के अनेको पदाधिकारी तथा सदस्यो ने माँ भारती के सपूत शेरे हिन्दुस्तान चद्रंशेखार आजाद के

शहीद स्थल आजाद पार्क (अलफ्रेड पार्क) स्थित प्रतिमा स्थल पर श्रदासुमन अर्पित कर श्रदाजँली दी।

शहीद स्थल पर ही श्रदाजँली सभा आयोजित की गयी। सभा को सम्बोधित करते हुए जिला अध्यक्ष कुन्दन श्रीवास्तव ने कहाँ कि चद्रंशेखर आजाद जी सच्ची श्रदाजँली तभी होगी जब हमारी पत्रकारिता मे देशहित सवॅप्रथम तथा निषपक्ष पत्रकारिता होगी। तभी श्रदेय चद्रंशेखर आजाद जी की सच्ची श्रदाजँली होगी।

इस पावन अवसर पर एनयूजे प्रयागराज भारत सरकार से मांग करता है कि देश के आजादी के आन्दोलन मे अदम्य साहस बीरता तथा देश के प्रति त्याग ओर बलिदान को ध्यान रखते हुए शहीद चद्रंशेखर आजाद जी को भारत रत्न सम्मान दे भारत सरकार। चद्रंशेखर आजाद के प्रतिमा पर श्रदासुमन अर्पित करने वाले तथा श्रदाजँली सभा को सम्बोधित करने वाले मे अखिलेश शुक्ला चित्रांशी यादव मधुर दरबारी सुशांत त्रिपाठी वी के यादव देवेद्रं शुक्ला शीतला तिवारी रतन शुक्ला अश्वनी श्रीवास्तव सैय्यद सुहैल हनीफ आनन्द निषाद संजय निषाद मो शाहिद अखिलेश अस्थाना जितेद्रं कुमार पंकज पाल कमल राज साहू आदि सदस्य और पदाधिकारी गण थे।

सम्पादकीय.....

कार्नी के भारत दौरे में पंजाब दरकिनार, दोषी कौन?

कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने भारत दौरे का ऐलान किया है। वह भारत में मुंबई और नई दिल्ली में बिजनैसमैन और पॉलिटिकल लीडर्स से मिलेंगे, जहां कनाडा और भारत के बीच ट्रेड और एनर्जी एग्रीमैंट को बढ़ावा देने पर बातचीत होगी। कनाडा और भारत के बीच 2010 से चल रहे सी.ई.पी.ए. फ्री ट्रेड एग्रीमैंट की द्विपक्षीय बातचीत को और करीब लाने पर भी बातचीत हो रही है। कार्नी का भारत दौरा इसलिए भी जरूरी है क्योंकि पिछले कुछ सालों में भारत और कनाडा के रिश्ते बद से बदतर होते गए थे लेकिन कार्नी ने इन रिश्तों को वापस पटरी पर लाने की पहल की है। उन्होंने चुनाव कैंपेन के दौरान साफ कर दिया था कि वह भारत के साथ मजबूत रिश्ते चाहते हैं। कैनासकस (कनाडा) में हुए जी–7 समिट के लिए भारतीय प्रधानमंत्री को न्यौता भेजकर कार्नी ने दिखा दिया था कि वह खालिस्तानी पार्टियों और उनके मीडिया साथियों के दबाव में नहीं आएंगे और उनके काम कनाडा और कनाडाई लोगों के हितों को सबसे पहले रखकर ही आगे बढ़ेंगे। इस दौरे की एक और खास बात यह है कि पहले जब भी कोई कनाडाई प्रधानमंत्री भारत आया, तो पंजाब भी इस दौरे में एक स्टॉपओवर रहा है। पॉल मार्टिन को छोड़कर, सभी प्रधानमंत्री अपने भारत दौरे के दौरान पंजाब आए लेकिन इस बार कार्नी के दौरे की जो डिटेल्स सामने आई हैं, उनसे यह साफ हो गया है कि प्रधानमंत्री पंजाब में नहीं रुकेंगे। इस फैसले से कनाडा में रहने वाले पंजाबी समुदाय में चर्चा शुरू हो गई है। जब प्रधानमंत्री ऑफिस के स्टाफ से इस बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि मार्क कार्नी का दौरा आध्थक और राजनीतिक मुद्दों को ध्यान में रखकर प्लान किया गया है और वह अक्सर कनाडा में सांस्कृतिक मुद्दों में भी हिस्सा लेते हैं। इन सबके बावजूद, पंजाबी और सिख समुदाय में इस मामले को लेकर थोड़ी निराशा है लेकिन आज जब अंतर्राष्ट्रीय नेताओं के एजैंडे में पंजाब को नजरअंदाज किया जा रहा है, तो सिख कम्युनिटी और पंजाबी कम्युनिटी को मिलकर सोचना होगा कि पंजाब के हाशिए पर जाने की वजह कौन है। पंजाबी समुदाय ने पिछले 100 सालों में कनाडा में अपनी खास पहचान बनाई है और समाज के हर क्षेत्र में अच्छा नाम कमाया है। पंजाबी समुदाय कनाडा में राजनीतिक तौर पर भी बहुत काबिल है, लेकिन पिछले 4 दशकों से फिरकापरस्त खालिस्तानी पार्टियों द्वारा चलाया जा रहा हेट कैंपेन पंजाब और पंजाबियत का दुश्मन बनकर उभरा है। शायद ही किसी और संस्था या विचार ने पंजाब, पंजाबियत और अंतर्राष्ट्रीय पंजाबी समुदाय का इतना नुकसान किया हो, जितना इन बांटने वाली ताकतों ने किया है। कार्नी के प्रधानमंत्री बनने के बाद, पंजाबी मूल के कुछ सांसद, जो खालिस्तानी पार्टियों के सपोर्टर हैं या उनसे वोट पाने के लिए बेचैन हैं, उन्होंने कार्नी का विरोध करना शुरू कर दिया, चाहे वह प्रधानमंत्री मोदी का कनाडा जी–7 का दौरा हो या भारत के साथ राजनीतिक और सुरक्षा संबंध सुलझाने की कोई पहल। बात यह है कि इन लोगों ने हर कदम पर कनाडा के प्रधानमंत्री और कनाडा सरकार को घेरने और बेइज्जत करने की कोशिश की और सरकारों से सीधे तौर पर मांग की कि वे कनाडा के हितों को नजरअंदाज करते हुए एक खास ग्रुप का नफरत भरा एजैंडा लागू करें, जिससे पूरे पंजाबी समुदाय को शर्मिंदगी उठानी पड़ी और पंजाबी समुदाय से जुड़े मुद्दे सरकार की नजर में विवादित हो गए। प्रधानमंत्री मार्क कार्नी और उनके कैबिनेट मैंबर्स को भी इन खालिस्तानी कट्टरपंथियों ने बार–बार धमकाया था, जब कनाडा की विदेश मंत्री बीबी अनीता आनंद की तस्वीर को इंदिरा गांधी की तस्वीर से जोड़कर उनके खिलाफ ड्क्षहसा दिखाई गई थी। इसी तरह, जब फैडरल इंटरनैशनल ट्रेड मिनिस्टर मनिंदर सिद्धू भारत के साथ ट्रेड डील करने गए, तो ओंटारियो सिख काऊंसिल ने सिद्धू के सोशल बायकाट की भी बात कही। क्या ऐसी हरकतें किसी कम्युनिटी को शोभा देती हैं? कनाडाई मीडिया कुछ खालिस्तानी गुंडों को सिखों और पंजाबियों के तथाकथित नुमाइंदे के तौर पर क्यों दिखा रहा है और उनके बुरे कामों का इल्जाम पूरे पंजाबी समुदाय पर कैसे लगाया जा रहा है, यह भी समझने और सोचने वाली बात है। खालिस्तानी अलगाववादियों और कट्टरपंथियों के कामों की कीमत आज पूरा पंजाबी समुदाय चुका रहा है।इस चीज के उभरने के लिए कुछ हद तक हमारा समुदाय भी जिम्मेदार है क्योंकि जब ये चंद 'टोटरू' सिख समुदाय के नुमाइंदे होने का दावा करते हैं, तो हम इसका विरोध नहीं करते और इस चुप्पी से इन लोगों को फायदा होता है कि सरकारें और दूसरे समुदाय सोचते हैं कि शायद वही पूरे समुदाय की नुमाइंदगी कर रहे हैं, जबकि असलियत यह है कि खालिस्तान कभी भी सिखों की मांग नहीं रही।

ए.आई. शिखर सम्मेलन, खुद को बेपर्दा करती कांग्रेस

बलबीर पुंज

कहते हैं 'घर का भेदी लंका ढाए'– आज जब दुनिया भारत को एक उभरती हुई आर्थिक, डिजिटल और कूटनीतिक शक्ति के रूप में देख रही है, तब देश के भीतर का एक राजनीतिक वर्ग जैसे हर राष्ट्रीय उपलब्धि और अपनी जड़ों पर कुल्हाड़ी चलाने पर आमादा दिखाई देता है। भारत की अर्थव्यवस्था, डिजिटल संरचना और कूटनीतिक सक्रियता में हाल के वर्षों में जो परिवर्तन दिखाई दिया है, उसने वैश्विक स्तर पर देश की भूमिका को नए सिरे से परिभाषित किया है। कृत्रिम बुद्धिमता (ए.आई.) जैसे उभरते क्षेत्रों में नीति–निर्माण और तकनीकी विकास को लेकर भारत की पहल इसी व्यापक परिवर्तन का हिस्सा है। दिल्ली में 16 से 20 फरवरी, 2026 के बीच आयोजित 'ए.आई. इंपैक्ट समिट 2026' इसी क्रम में एक महत्वपूर्ण पड़ाव था, जिसका उद्देश्य केवल तकनीकी सहयोग नहीं, बल्कि ए.आई. के नैतिक और लोकतांत्रिक उपयोग पर वैश्विक सहमति विकसित करना भी था। लेकिन कांग्रेस नेतृत्व, विशेषकर उसके शीर्ष नेता और नेता–प्रतिपक्ष (लोकसभा) राहुल गांधी और उनसे प्रेरित कार्यकर्त्ताओं ने इस अवसर को भी ओछी राजनीति का अखाड़ा बना दिया। असहमति और विरोध लोकतंत्र में प्राणवायु हैं, परंतु भारत मंडपम के भीतर युवा कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं द्वारा किया गया 'अर्धनग्न प्रदर्शन' कोई स्वस्थ लोकतांत्रिक मूल्य नहीं, बल्कि राजनीतिक–वैचारिक खीझ के साथ व्यक्तिगत वैमनस्य का भद्दा प्रदर्शन था। स्वयं राहुल गांधी ने अपने आरोपी कार्यकर्त्ताओं को 'बब्बर शेर' कहकर यह स्पष्ट संदेश दिया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को घेरने के लिए वे इसी तरह देश की साख को दांव पर लगाते रहेंगे। पूरे घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने इसे वैचारिक खोखलेपन का प्रतीक बताया है, तो समाजवादी पार्टी सहित कुछ अग्रिम भाजपा–विरोधी दलों ने भी कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं की इस फूहड़ता से दूरी बना ली है। भारत की छवि को धूमिल और कलंकित करने की यह औपनिवेशिक मानसिकता नई नहीं है। वर्ष 1927 में अमरीकी लेखिका कैथरीन मेयो ने अपनी पुस्तक 'मदर इंडिया' में भारतीय समाज में व्याप्त समस्याओं–जातिवाद, बाल–विवाह, स्वच्छता की कमी आदि को इस तरह प्रस्तुत किया कि मानो भारत स्वशासन के योग्य ही नहीं है। लेखिका का मत था कि 'आंतरिक विकृतियों' से ग्रस्त समाज राजनीतिक स्वतंत्रता के लायक नहीं है। उस किताब को गांधीजी ने 'नाली निरीक्षक की रिपोर्ट' कहकर खारिज कर दिया था। गांधीजी का पक्ष था कि समाज की कमियों को भीतर से सुधारा जा सकता है और यह आंतरिक दायित्व है, न कि उन्हें अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उछालकर अपने ही राष्ट्र की साख गिराई जाए। आज विडंबना यह है कि गांधीजी की विरासत पर स्वघोषित दावा करने वाला कांग्रेस नेतृत्व स्वयं उसी औपनिवेशिक मानसिकता से जकड़ा है, जहां राजनीतिक द्वेष में एक घटना को भारत के अपने वैश्विक आयोजन की विफलता का प्रमाण मानकर प्रस्तुत किया जा रहा है। ए.आई. शिखर सम्मेलन में एक निजी विश्वविद्यालय द्वारा प्रदर्शित 'रोबोटिक डॉग', जोकि वास्तव में चीन निर्मित था और उस शैक्षणिक संस्था ने अपने छात्रों की उपलब्धि के रूप में पेश करके दिखाया था, उसे आधार बनाकर राहुल गांधी ने पूरे आयोजन को 'अव्यवस्थित' और 'तमाशा' करार दे दिया। एक निजी शिक्षण संस्थान, जिसे विवाद पश्चात कार्यक्रम से बाहर कर दिया गया था, उसके अपराध को तथाकथित राष्ट्रीय 'अक्षमता' का प्रतीक बना देना वही मानसिकता है, जो कभी मेयो रूपी औपनिवेशिक शक्तियां भारतीय समाज के विरुद्ध इस्तेमाल करती थीं। अतीत में ऐसे अवसर भी आए, जब राजनीतिक मतभेदों के बावजूद राष्ट्रीय दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी गई। 1994 में जब पाकिस्तान ने कश्मीर मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग में उठाने की कोशिश की, तब तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हाराव ने तबके विपक्षी नेता अटल बिहारी वाजपेयी को भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व सौंपा था। राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए उस समय दलगत राजनीति को दरकिनार कर दिया गया और इसके परिणामस्वरूप पाकिस्तान का प्रस्ताव विफल हो गया। यह उस राजनीतिक परिपक्वता का उदाहरण था, जो आज दुर्लभ होती जा रही है। अब देश के जिस ए.आई. शिखर सम्मेलन में गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, एमेजॉन, ओपन ए.आई. और एंथ्रोपिक जैसी शीर्ष वैश्विक तकनीकी कंपनियों के शीर्ष अधिकारी उपस्थित थे, फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों सहित अनेकों राष्ट्राध्यक्ष शामिल थे, लगभग 90 देशों ने 'नई दिल्ली घोषणा' को स्वीकार किया और 250 अरब डॉलर से अधिक के निवेश की प्रतिबद्धता जताई गई हो, उसे कांग्रेस ने महज सरकारी 'जनसंपर्क अभियान' बताकर खारिज कर दिया। क्या यह सम्मेलन किसी राजनीतिक दल की बजाय भारत का नहीं था? इसी वैश्विक मंच पर भारतीय ए.आई. स्टार्टअप 'सर्वम' ने अपना नया 'इंडस ए.आई. चौट एप' जारी किया, जो 22 भारतीय भाषाओं में संचालित होता है। यह एप कंपनी के 105 बिलियन मानक वाले बड़े भाषाई ढांचे पर आधारित है, जो विशेष रूप से भारतीय उपभोक्ताओं के लिए विकसित किया गया है। यह उस तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में एक ठोस कदम है, जिसकी चर्चा वर्षों से रही है। लेकिन इस पर गौरवान्वित होने की बजाय कांग्रेस प्रेरित इको–सिस्टम पूरे आयोजन को ही बदनाम करने में जुटा रहा। वैश्विक मंचों में यह संतुलन आवश्यक है कि घरेलू आलोचना किस सीमा तक व्यक्त की जाए। यहां सवाल यह नहीं कि मोदी सरकार की आलोचना होनी चाहिए या नहीं, असल सवाल यह है कि क्या असहमति या विरोध के नाम पर देश की प्रतिष्ठा को दांव पर लगाना ठीक है? क्या राजनीतिक खींचतान को अंतर्राष्ट्रीय मंचों तक ले जाना उचित है? स्वतंत्रता के दशकों बाद तक भारत की वैश्विक पहचान को गांधीजी, गरीबी रूपी सामाजिक विषमता, सांप–संपेरों और ताजमहल से जोड़ा जाता था। परंतु आज वही भारत विश्व आर्थिकी, कूटनीति और तकनीकी विमर्श का सहभागी बन चुका है। ए.आई. और जी20 जैसे अंतर्राष्ट्रीय आयोजन करने की क्षमता रखता है। विडंबना है कि मोदी सरकार को घेरने की जल्दबाजी में कांग्रेस नेतृत्व ने अपनी कुंठा को देश के सामने रख दिया है।

बाह्य ऋण, विकास और वैश्विक जिम्मेदारी: भारत की आर्थिक रणनीति

अरुण डनायक

आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था में बाह्य ऋण किसी भी राष्ट्र के लिए एक अपरिहार्य यथार्थ बन चुका है और भारत भी इससे अछूता नहीं है। मध्य–आय जाल की स्थिति में विकास की गति बनाए रखने, अवसंरचना, उद्योग और सामाजिक क्षेत्र में निवेश तथा विशाल जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बाह्य पूंजी की आवश्यकता बनी रहती है। स्वतंत्रता के बाद से भारत ने बाह्य उधारी को अंधानुकरण नहीं, बल्कि एक सुविचारित नीति–उपकरण के रूप में अपनाया है। इसका उपयोग मुख्यतरू अवसंरचना, ऊर्जा, परिवहन, औद्योगिक विस्तार और वित्तीय स्थिरता के लिए किया गया है। विशेष रूप से, बाह्य वाणिज्यिक उधारी और आवश्यकता पड़ने पर आईएमएफ से प्राप्त ऋणों ने निजी क्षेत्र को भुगतान–संतुलन बनाए रखने में सहायता दी, जिससे निवेश, उत्पादन क्षमता और रोजगार सृजन को बल मिला। संविधान के अनुच्छेद 293 के तहत राज्यों के लिए प्रत्यक्ष विदेशी ऋण लेने की सीमित संभावना होती है, और अधिकांश बाह्य उधारी केंद्र सरकार के माध्यम से होती है, जिससे ऋण प्रबंधन और वित्तीय स्थिरता को संस्थागत रूप से नियंत्रित रखा जाता है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के अनुसार, जून 2025 के अंत तक केंद्र और राज्यों का कुल बाह्य ऋण 747.2 अरब अमेरिकी डॉलर था, जो सितंबर 2025 में हल्का घटकर लगभग 746 अरब डॉलर रह गयाकृ अर्थात समग्र स्तर पर स्थिरता बनी रही। यह जून 2024 के 681.5 अरब डॉलर की तुलना में वार्षिक आधार पर 9.6 प्रतिशत अधिक है। दिसंबर 2025 को समाप्त तिमाही में बाह्य वाणिज्यिक उधारी (ईसीबी) के माध्यम से उधारी प्रवाह में वृद्धि के संकेत मिलेय दिसंबर माह में अकेले 4.43 अरब डॉलर की नई ईसीबी जुटाई गई, जिससे अप्रैल–दिसंबर 2025 के दौरान कुल जुटाई गई राशि लगभग 27.5 अरब डॉलर तक पहुंच गई। यह आंकड़े प्रवाह को दर्शाते हैं, न कि कुल बकाया स्टॉक को। इससे संकेत मिलता है कि वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद भारतीय कंपनियां अंतरराष्ट्रीय पूंजी बाजारों तक अपनी पहुंच बनाए हुए हैं। ऋण राशि बढ़ने के बावजूद बाह्य ऋण–से–जीडीपी अनुपात मार्च 2025 के 19.1 प्रतिशत से घटकर 18.9 प्रतिशत रह गया है, जो दर्शाता है कि आर्थिक वृद्धि ऋण वृद्धि से तेज रही। यद्यपि केंद्रीय सरकार की सकल राजस्व प्राप्तियों (रुपए 34.96 लाख करोड़) की तुलना में बाह्य ऋण का स्तर ऊंचा प्रतीत होता है, फिर भी यह अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार अभी जोखिम की सीमा के भीतर है। हाल के समय में प्रत्यक्ष विदेशी निवेशकों के भारतीय शेयर बाजार से दूरी बनाए रखने की प्रवृत्ति के चलते बाह्य ऋण पर निर्भरता बढ़ने की संभावना बनी है, जिससे कंपनियों के लिए विनिमय–दर जोखिम का प्रबंधन और अधिक जटिल तथा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। भारत का बाह्य ऋण संरचनात्मक रूप से सुरक्षित है। 82 प्रतिशत दीर्घकालिक, अल्पकालिक मात्र 18.1प्रतिशत, विदेशी मुद्रा भंडार से 93प्रतिशत से अधिक आच्छादन, ऋण–सेवा अनुपात केवल 6.6प्रतिशत तथा परिसंपत्ति–दायित्व अनुपात 79.25प्रतिशत होने के कारण तात्कालिक जोखिम न्यूनतम है। यद्यपि डॉलर पर अपेक्षाकृत अधिक निर्भरता से विनिमय–दर जोखिम उत्पन्न होता है, लेकिन लगभग 700 अरब डॉलर के विदेशी मुद्रा भंडार द्वारा 93 प्रतिशत से अधिक बाह्य ऋण का आच्छादन इस जोखिम को प्रभावी रूप से संतुलित करता है। रुपये की डॉलर के मुकाबले हाल की कमजोरी का असर सीधे कुल बाह्य ऋण की राशि पर नहीं पड़ता। इसका मुख्य प्रभाव ऋण–सेवा लागत, ब्याज भुगतान और भविष्य में ऋण के पुनर्भुगतान पर पड़ता है, जिससे कंपनियों और सरकार की वित्तीय योजना पर अतिरिक्त दबाव बन सकता है। आम धारणा के विपरीत, भारत का बाह्य ऋण किसी एक देश या संस्था पर केंद्रित नहीं है। इसका स्वरूप विविध और संतुलित हैकृ 40 प्रतिशत वाणिज्यिक उधारी (अंतरराष्ट्रीय बांड और विदेशी बैंक), 22 प्रतिशत एनआरआई जमाएं, 11 प्रतिशत विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक जैसी बहुपक्षीय संस्थाएं, 5 प्रतिशत जापान जैसे द्विपक्षीय ऋणदाताओं, तथा आईएमएफ की 21.6 अरब डॉलर की सीमित देनदारियां (मुख्यतः 1991 के संकट से जुड़ी)। भारत ने वर्षों से आईएमएफ से कोई नया कार्यक्रम ऋण नहीं लिया, जिससे नीति–स्वायत्तता बनी रही। भारत की ऋण–चुकाने की क्षमता लगातार मजबूत बनी हुई है। मूलधन और ब्याज सहित ऋण–सेवा भुगतान चालू प्राप्तियों का केवल 6.6 प्रतिशत है। अंतरराष्ट्रीय परिसंपत्तियां–दायित्व अनुपात 79.25 प्रतिशत तक पहुंच चुका है, अर्थात भारत की अंतरराष्ट्रीय परिसंपत्तियां उसकी कुल विदेशी देनदारियों के लगभग 80प्रतिशत को आच्छादित करती हैं। यह भारत की बाह्य भुगतान क्षमता की मजबूती और तात्कालिक बाह्य संकट से सुरक्षा को स्पष्ट करता है। भू–राजनीतिक तनाव, वैश्विक ब्याज दरों में उतार–चढ़ाव और संरक्षणवादी प्रवृत्तियां बाह्य ऋण प्रबंधन की जटिलता बढ़ा सकती हैं, विशेषकर वाणिज्यिक उधारी में, जहां सतत निगरानी और विवेकपूर्ण नीति आवश्यक है। फरवरी 2026 में आरबीआई ने ईसीबी ढांचे में उदारीकरण करते हुए पात्र उधारकर्ताओं की श्रेणी का विस्तार, स्वचालित मार्ग के अंतर्गत कुछ सीमाओं में शिथिलता, औसत परिपक्वता अवधि संबंधी शर्तों में लचीलापन तथा अनुमोदन प्रक्रियाओं को सरल बनाया। इससे भारतीय कंपनियोंकृविशेषकर अवसंरचना और विनिर्माण क्षेत्रकृके लिए विदेशी पूंजी जुटाना अधिक सुगम होगा। बाह्य ऋण प्रबंधन के साथ–साथ भारत आज 65 से अधिक देशों को आर्थिक सहायता प्रदान करने वाला एक प्रमुख राष्ट्र है। भूटान, नेपाल, मालदीव, मॉरीशस, म्यांमार, श्रीलंका, अफगानिस्तान तथा अनेक अफ्रीकी देश प्रमुख सहयोग प्राप्त देश हैं। केंद्रीय बजट 2025–26 में विदेश मंत्रालय के अंतर्गत लगभग रुपए 6,750 करोड़ विदेशी सहायता के लिए निर्धारित किए गए हैं। भारत न तो ग्रीस और अर्जेंटीना जैसी गंभीर ऋण–जाल वाली अर्थव्यवस्थाओं की स्थिति में है, जहां वित्तीय अनुशासन की कमी, उच्च सार्वजनिक ऋण और संरचनात्मक कमजोरियां संकट का कारण बनी थीं और न ही 1997 के एशियाई वित्तीय संकट से प्रभावित देशों जैसी स्थिति का सामना कर रहा है। थाईलैंड में संकट अल्पकालिक ऋण और भुगतान असंतुलन से, इंडोनेशिया में विदेशी ऋण और अवमूल्यन से, तथा दक्षिण कोरिया में अत्यधिक देनदारियां और बैंकिंग संकट से उत्पन्न हुआ था। इसके विपरीत, भारत ने दीर्घकालिक ऋण संरचना, संतुलित मुद्रा संयोजन, मजबूत बैंकिंग प्रणाली, आरबीआई के कठोर पर्यवेक्षण तथा ऋण चुकाने की प्रतिबद्धता के माध्यम से वित्तीय स्थिरता बनाए रखी है। भारत अवसंरचना, उद्योग और रोजगार सृजन के लिए विवेकपूर्ण उधारी करता है और विगत सरकारों द्वारा अपनाई नीतियां आज भी बाह्य ऋण प्रबंधन को मजबूत रखती हैं और दीर्घकालिक निवेश, सतत विकास तथा पड़ोसी सहायता में नीतिगत निरंतरता सुनिश्चित करती हैं। उधार और उदारता की रणनीति भारत की आर्थिक परिपक्वता, वित्तीय अनुशासन और अंतरराष्ट्रीय उत्तरदायित्व को दर्शाती है, जबकि वैश्विक ब्याज दरों, भू–राजनीतिक अनिश्चितताओं और संरक्षणवाद के मद्देनजर सतत निगरानी की आवश्यकता बनी हुई है।

मां तुझे सलाम, यही है असली वंदेमातरम

सर्वमित्रा सुरजन

अपने बेटे को जेल में देखकर भी मां कहे कि हमें आज भगत सिंह की जरूरत है, तो ऐसी मां को हजार सलाम, जो बिना घबराए अपने बेटे को न केवल हौसला दे रही हैं, बल्कि बाकी युवाओं को भी ऐसे अन्याय के खिलाफ खड़े होने का आह्वान कर रही हैं। ऐसी ही एक मिसाल उत्तराखंड के कोटद्वार से आई, जहां जिम प्रशिक्षक दीपक की मां ने उन्हें अन्याय के खिलाफ खड़े होने की परवरिश दी। वंदे मातरम का असली मतलब अगर भाजपा के लोग समझते तो कभी उसे अपनी संकीर्ण मानसिकता के साथ राजनीतिक फायदे के लिए इस्तेमाल नहीं करते। लेकिन भाजपा के लिए वंदे मातरम का उद्घोष भी वैसा ही है, जैसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपनी मां के संघर्ष को बयां करें। देश से लेकर अंतरराष्ट्रीय मंचों तक पर नरेन्द्र मोदी ने न केवल अपनी गरीबी का रोना रोया, बल्कि अपनी मां के संघर्षों का जिक्र कर आंसू बहाए, ताकि सहानुभूति मिल सके। इसके बाद जन्मदिन पर कैमरे के कई एंगल्स के बीच उनके हाथ से प्रसाद खाना या उनके पैरों पर बैठना जैसे उपक्रम भी उन्होंने किए ताकि मां–बेटे के प्यार का राजनीतिक इस्तेमाल हो सके। हालांकि जब तक नरेन्द्र मोदी मुख्यमंत्री रहे, उनकी मां का ऐसा सार्वजनिक जिक्र हुआ हो, याद नहीं पड़ता। क्या प्रधानमंत्री बनने के बाद उन्हें अपनी मां के करीब होने की जरूरत ज्यादा पड़ी, यह सोचने वाली बात है। नोटबंदी के फैसले को सही ठहराने के लिए प्रधानमंत्री ने अपनी मां को बैंक की कतार में भी खड़ा कर दिया था और जब उनके जीवन के आखिरी दिनों में जब वे आईसीयू में थीं, तब भी कई कैमरों के साथ नरेन्द्र मोदी आईसीयू में पहुंचे थे, यह भी सबने देखा है। उनकी मौत के बाद भी मां की ममता को राजनैतिक फायदे के लिए भुनाने की कोशिशें उन्होंने की, याद कीजिए कि बिहार चुनाव के वक्त वे गयाजी में उनका पिंडदान करने वाले थे, जबकि यह काम पहले उनके भाई वाराणसी में कर चुके थे। दो–दो बार पिंडदान कर मोदी न केवल अपनी दिवंगत मां का अपमान करते, बल्कि हिंदू धर्म का भी अनादर ही होता। लेकिन समरथ को नहीं दोष गुंसाईं को मोदी ने शायद कुछ ज्यादा ही गंभीरता से ले लिया है कि वे कुछ भी करेंगे और सवाल नहीं उठेंगे। बहरहाल, मां के नाम को भुनाने का ताजा उदाहरण नरेन्द्र मोदी ने मेरठ में रेपिड मेट्रो के उद्घाटन पर दिया, जहां भाषण देने के दौरान उन्होंने कांग्रेस पर निकृष्ट से निकृष्टतम शब्दों का इस्तेमाल कर हमला किया, इसके साथ ही कहा कि कांग्रेस के लोग उनकी मां को अपशब्द कहते हैं। जबकि बिहार चुनाव के दौरान हुए इस प्रकरण में कांग्रेस का हाथ है, ऐसा कहीं साबित नहीं हुआ है। लेकिन इस समय नरेन्द्र मोदी एपस्टीन फाइल्स, अमेरिका से ट्रेड डील, ऑपरेशन सिंदूर पर उठे सवाल, मनरेगा को खत्म करना, हरदीप पुरी को संरक्षण जैसे कई मुद्दों पर इतनी बुरी तरह घिरे हुए हैं कि उनकी बौखलाहट अब खुलकर जाहिर होने लगी है। मोदी को यह समझ नहीं आ रहा कि सार्वजनिक तौर पर रोने–धोने की चालाकी से अब सियासी फायदा नहीं मिलेगा, क्योंकि लोग भी देश की हकीकत देख रहे हैं। और जिन्हें अब तक हकीकत नजर नहीं आई, उन्हें भारत मंडपम में एआई इम्पैक्ट समिट के दौरान युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने शर्ट उतार कर प्रदर्शन कर दिखा दिया कि मोदी इज कॉम्प्रोमाइज्ड। इस प्रदर्शन की भाजपा समेत मीडिया के बड़े हिस्से ने खूब आलोचना की, लेकिन इसका कितना व्यापक असर हुआ है, ये मोदी सरकार की घबराहट ने जाहिर कर दिया। उसने पहले कई कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया, लेकिन गिरफ्तार लोगों ने न डर दिखाया, न आत्मसमर्पण (सरेंडर) किया और न कॉम्प्रोमाइज्ड (दबाव में आकर समझौता) हुए। इसके बाद कांग्रेस पर दबाव बनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उसकी सार्वजनिक आलोचना की। कांग्रेस नेताओं को धिक्कारते हुए प्रधानमंत्री ने ये तक कह दिया कि इन्हें शर्म नहीं आती। लेकिन इसके बाद भी कांग्रेस के तेवर ढीले नहीं हुए, बल्कि राहुल गांधी ने तो बाकायदा वीडियो जारी कर बता दिया कि असली शर्म क्या होती है और ये किसे आनी चाहिए। राहुल गांधी ने कहा श्मोदी जी, आप शर्म की बात करते हो? शर्म की बात मैं आपको बताता हूं। एपस्टीन फाइल में आपका, आपके मंत्री और आपके मित्र का नाम साथ में आना, ऐसे घिनौने अपराधी के साथ आपका नाम जुड़ा होना – ये शर्म की बात है। अमेरिका के साथ ट्रेड डील में देश को बेच देना शर्म की बात है। राहुल ने आरोप लगाया कि मोदी सरकार ने देश का डेटा दे दिया, किसानों को खत्म कर दिया और टेक्सटाइल इंडस्ट्री को बर्बाद कर दिया।श राहुल ने अडानी पर अमेरिका में चल रहे केस का जिक्र किया और कहा, पूरा देश जानता है कि अडानी केस ने आपकी रातों की नींद उड़ा रखी है। यह भाजपा और आपके फाइनेंशियल आर्किटेक्चर पर केस है। 14 महीनों से कोई कार्रवाई नहीं हुई– ये शर्म की बात है।श राहुल ने कहा, श्मोदी जी, आप अपने मित्रों अनिल अंबानी, अडानी और खुद के लिए जो उचित समझें, वो कीजिए। मैं और कांग्रेस पार्टी के बब्बर शेर देश की रक्षा करते रहेंगे– एक इंच पीछे नहीं हटेंगे। राहुल गांधी ने न केवल नरेन्द्र मोदी को चेतावनी दे दी, बल्कि अपने कार्यकर्ताओं को भी संदेश दे दिया कि वो हर हाल में उनके साथ खड़े हैं। युवा कांग्रेस में इस नए जोश का दिखना जाहिर करता है कि जिस कांग्रेस मुक्त भारत का सपना लेकर मोदी सत्ता में आए थे, वो अब दूर की कौड़ी नहीं बल्कि असंभव ही है। राहुल गांधी का अपने कार्यकर्ताओं के साथ खड़े होना जाहिर बात है, लेकिन बड़ी बात ये है कि अब कार्यकर्ताओं के अभिभावक भी उनके साथ खड़े हो रहे हैं। जैसे युवा कांग्रेस अध्यक्ष उदय भानु चिब को एआई समिट में प्रदर्शन का मास्टरमाइंड बताते हुए पुलिस ने गिरफ्तार किया और अब उन्हें चार दिनों की रिमांड पर भी भेजा जा चुका है।

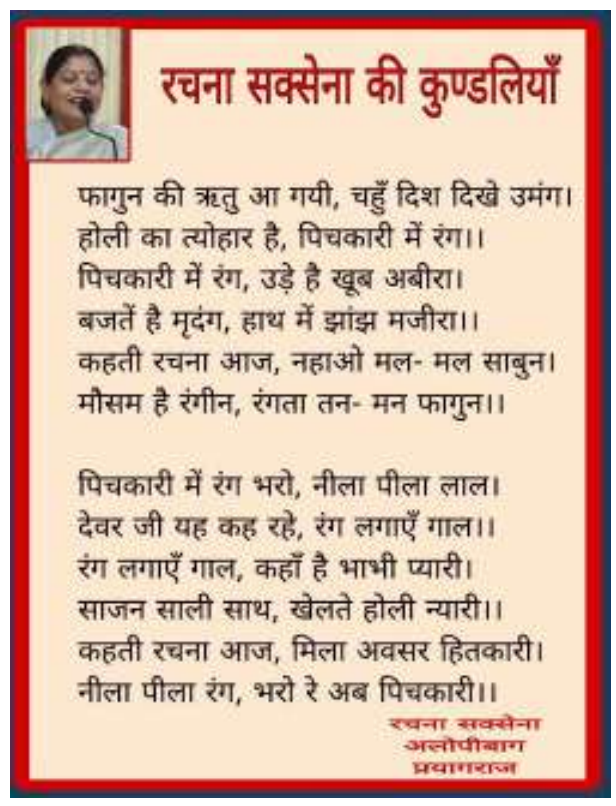

14 साल बाद अक्षय,प्रियदर्शन की वापसी, भूत बंगला का पहला गाना राम जी आ के भला करेंगे रिलीज

भूत बंगला को लेकर एक्साइटमेंट लगातार बढ़ती जा रही है क्योंकि यह फिल्म अक्षय कुमार और फिल्ममेकर प्रियदर्शन की ओजी बॉलीवुड जोड़ी को 14 साल के लंबे गैप के बाद वापस साथ ला रही है। बालाजी मोशन पिक्चर्स द्वारा प्रोड्यूस की गई इस फिल्म ने उन ऑडियंस के बीच पहले से ही जबरदस्त एंटीसिपेशन पैदा कर दिया है, जो इस जोड़ी की आइकॉनिक कॉमेडी एंटरटेनर फिल्में देख कर बड़े हुए हैं। एक्साइटमेंट को और बढ़ाते हुए, मेकर्स ने फिल्म का पहला गाना 'राम जी आके भला करेंगे' रिवील कर दिया है, जो एक हाई–स्पिरिटेड ट्रैक है और इसमें अक्षय कुमार अपने पीक एंटरटेनर मोड में नजर आ रहे हैं। पागलपन, नॉस्टैल्जीआ और उनकी ट्रेडमार्क कॉमिक एनर्जी से भरपूर यह गाना, फिल्म की इस मजेदार दुनिया की एक वाइब्रेंट झलक पेश करता है। कॉमिक एनर्जी से भरपूर यह एक स्पिरिटेड और पेपी ट्रैक है, 'राम जी आके भला करेंगे' फिल्म के सार को बखूबी कैप्चर करता है। इसके इन्फेक्शियस हाई–ऑक्टेन बीट्स और प्लेफुल विजुअल्स एक हंसी से भरी सवारी के लिए मूड सेट कर देते हैं, जो श भूत बंगलाश को एक फुल–थ्रॉटल एंटरटेनर के रूप में मजबूती से एस्टेब्लिश करते हैं। यह गाना अक्षय कुमार को उनके क्लासिक अवतार में दिखाता है, जो भूतिया दुनिया और उसके कई अजीबोगरीब भूतों के बीच बड़े आराम से नेविगेट कर रहे हैं, और स्पूक्टैकुलर केओस और कॉमिक फ्लेयर से भरी एक फ्रंटिक और मजेदार परफॉरमेंस दे रहे हैं। घ्रीतम द्वारा कंपोज किए गए और कुमार के लिखे लिरिक्स के साथ, इस गाने को अरमान मलिक और आरवन (देव अरिजीत) ने गाया है, जिसमें मेलो डी द्वारा लिखा और परफॉर्म किया गया एक रैप सेगमेंट इसकी लाइवली बीट्स में एक कंटेम्परेरी एज जोड़ता है। बालाजी मोशन पिक्चर्स, जो बालाजी टेलीफिल्म्स लिमिटेड का एक हिस्सा है, केप ऑफ गुड फिल्म्स के साथ मिलकर श्भूत बंगलाश पेश करते हैं, जिसमें अक्षय कुमार, वामीका गब्बी, परेश रावल, तब्बू और राजपाल यादव लीड रोल्स में हैं।प्रियदर्शन द्वारा डायरेक्टेड इस फिल्म को अक्षय कुमार, शोभा कपूर और एकता आर कपूर ने प्रोड्यूस किया है।घ10 अप्रैल 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है।

शादी के बाद पहली बार नजर आए 'विरोश' फैंस को दिया फ्लाइंग किस

फैंस के सबसे चहेते कपल विरोश यानी विजय देवरकोंडा और रश्मिका मंदाना अब आधिकारिक रूप से पति–पत्नी बन गए हैं। दोनों ने कल यानी 26 फरवरी को उदयपुर में एक–दूसरे का हाथ थामा। अब शादी के अगले दिन विजय–रश्मिका पहली बार पति–पत्नी के तौर पर नजर आए। कपल को एयरपोर्ट पर स्पॉट किया गया। इस दौरान दोनों काफी खुश नजर आए और उन्होंने पैपराजी को पोज भी दिए। शादी के अगले दिन कपल हाथों में हाथ डाले रोमांटिक अंदाज में नजर आए। इस दौरान रश्मिका जहां लाल रंग के अनारकली सूट में नजर आईं, वहीं विजय देवरकोंडा लाइट व्हाइट कलर के शॉर्ट कुर्ते और पैंट में नजर आए। इस दौरान कपल के चेहरे पर बड़ी सी मुस्कुराहट और शादी का ग्लो साफ झलक रहा था। कपल को देखते ही पैपराजी ने उन्हें मुबारकवाद दी, जिसका दोनों ने हंसकर जवाब दिया और हाथ जोड़कर अभिवादन किया। इस दौरान विजय–रश्मिका ने फैंस और पैपराजी को फ्लाइंग किस भी दिया। दोनों का ये वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। लगभग आठ साल तक चले अफेयर के बाद विजय और रश्मिका ने 26 फरवरी को शादी कर ली। कपल ने तेलुगु और कोडवा दोनों परंपराओं से शादी की रस्में पूरी कीं। फैंस को लंबे वक्त से इस कपल के एक होने का इंतजार था। अंततरू ये इंतजार कल पूरा हुआ। शाम में जैसे ही कपल ने शादी की तस्वीरें जारी कीं, फैंस और सेलेब्स के कमेंट की बाढ़ आ गई। विजय और रश्मिका की मुलाकात साल 2018 में आई फिल्म 'गीता गोविंदम' के सेट पर हुई थी। इसके बाद दोनों ने साथ में 2019 में आई फिल्म 'डियर कॉमरेड' में भी काम किया। इस दौरान दोनों की दोस्ती देखते–देखते प्यार में बदल गई। दोनों के अफेयर को लेकर चर्चाएं तो अक्सर ही उठती रहीं। दोनों को कई मौकों पर साथ स्पॉट भी किया गया, लेकिन कपल ने कभी भी खुलकर अपने रिश्ते को स्वीकार नहीं किया।

जतीन सरना, मधुरिमा रॉय और प्रणय पचौरी स्टारर `ना जाने कौन आ गया' का ट्रेलर रिलीज

बहुप्रतीक्षित हिंदी फीचर फिल्म ना जाने कौन आ गया का ट्रेलर आखिरकार रिलीज हो चुका है जतीन सरना, मध ुरिमा रॉय और प्रणय पचौरी स्टारर दमदार कलाकारों से सजी इस फिल्म का निर्देशन विकास अरोड़ा ने किया है। फिल्म का निर्माण विपुल धवन और पूजा अरोड़ा ने किया है। ट्रेलर लॉन्च इवेंट में फिल्म की पूरी स्टारकास्ट मौजूद रही। जतीन सरना, मधुरिमा रॉय और प्रणय पचौरी के साथ निर्माता पूजा अरोड़ा, को–प्रोड्यूसर रीत अरोड़ा और निर्देशक विकास अरोड़ा ने मीडिया से बातचीत की। वहीं निर्माता विपुल धवन ने अपनी शुभकामनाएं भेजीं। इवेंट का माहौल फिल्म की भावनात्मक और जोशीला नजर आया। 2 मिनट 26 सेकंड का यह ट्रेलर एक दिल छू लेने वाली लाइन से शुरू होता है "प्यार बड़ी कमाल की फीलिंग्स होती है।" इसके साथ ही जतीन सरना और मधुरिमा रॉय की मासूम और खूबसूरत लव स्टोरी की झलक सामने आती है। उत्तराखंड की वादियों में फिल्माए गए रोमांटिक सीन इस प्रेम कहानी को और भी खूबसूरत बना देते हैं। बर्फ से ढकी पहाड़ियां, शांत झीलें और प्यार भरे पल ट्रेलर का हर फ्रेम इमोशन से भरपूर है। दोनों कलाकारों की केमिस्ट्री बेहद नैचुरल और दिल को छू लेने वाली लगती है। ट्रेलर के अगले दृश्य में कुछ इंटेंस फ्लैशबैक सीन के जरिए प्रणय पचौरी के किरदार की एंट्री होती है, जो इस प्रेम कहानी को एक जटिल लव ट्राएंगल में बदल देती है। मधुरिमा रॉय के साथ उनका रिश्ता कहानी में नया मोड़ और भावनात्मक टकराव लेकर आता है। ट्रेलर में प्यार, तकरार, अधूरापन और खुद को तलाशने की जद्दोजहद को बेहद खूबसूरती से दिखाया गया है। खासतौर पर जतीन सरना और प्रणय पचौरी के बीच के टकराव वाले सीन और दमदार डायलॉग्स काफी प्रभाव छोड़ते हैं। ट्रेलर के आखिर में एक संवाद गूंजता है, जो सीध ो दिल पर असर करता है घ"एक शख्स पूरा है३ और दूसरा खुद को ढूंढ रहा है।" फिल्म का टाइटल ट्रैक, जिसे रेखा भारद्वाज ने अपनी आवाज में गाया है, ट्रेलर को भावनात्मक ठहराव देता है। वहीं 'मैं नहीं जानता' गाना कहानी के उस मोड़ पर सुनाई देता है जहां दिल टूटने और जुदाई का एहसास गहराता है। कुल मिलाकर, ना जाने कौन आ गया का ट्रेलर एक ऐसी इमोशनल लव स्टोरी है जो सिर्फ रोमांस नहीं, बल्कि रिश्तों की सच्चाई और खुद की तलाश की कहानी भी बताती है। दमदार अभिनय, खूबसूरत लोकेशन, इंटेंस डायलॉग्स और दिल छू लेने वाला संगीत की झलक ट्रेलर में देखी जा सकती है लॉन्च के अवसर पर जतिन सरना ने कहा, "यह फिल्म प्रेम की संवेदनशीलता को सामने लाती है। मेरा किरदार कई परतों वाला है वह गहराई से प्रेम करता है, लेकिन भावनात्मक रूप से पूर्ण नहीं हो पाता। मुझे विश्वास है कि दर्शक उसकी ईमानदारी से जुड़ाव महसूस करेंगे।"मधुरिमा रॉय ने कहा, "यह कहानी आधुनिक रिश्तों में लिए गए फैसलों और उनके परिणामों पर आधारित है। ट्रेलर में दिखाई देने वाली केमिस्ट्री उस भावनात्मक यात्रा का हिस्सा है, जिसे हमने उत्तराखंड में शूटिंग के दौरान महसूस किया।"प्रणय पचौरी ने बताया, "मेरा किरदार कहानी में अनिश्चितता लाता है। यह सिर्फ एक प्रेम त्रिकोण नहीं है, बल्कि खुद्द को खोजने और भावनात्मक संघर्ष की कहानी भी है।"निर्देशक विकास अरोड़ा ने कहा, "ना जाने कौन आ गया" प्रेम को रूढ़ियों से परे दिखाने का प्रयास है। यह पहले स्वयं को समझने और फिर किसी और को समझने की मनमोहक यात्रा है। उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता इस फिल्म में एक मौन पात्र की तरह उभरकर सामने आई है।"सशक्त अभिनय, भावनात्मक संवाद, आकर्षक दृश्य और मधुर शीर्षक गीत के साथ, ना जाने कौन आ गया 6 मार्च 2026 को सिनेमाघरों रिलीज होगी

यहां कोई वफादार नहीं होता', क्या करण जौहर ने जान्हवी कपूर पर कसा तंज?

नर्माता–निर्देशक करण जौहर ने स्टार्स को लेकर कुछ ऐसा कहा है, जो अब चर्चा का विषय बन गया है। यही नहीं करण का ये बयान जान्हवी पर तंज माना जा रहा है। जानिए आखिर क्यों करण ने कहा कि एक्टर्स किसी के वफादार नहीं होते, वो सिर्फ इनसिक्योर होते हैं, फिल्म इंडस्ट्री में स्टार्स के करियर को मैनेज करने की जिम्मेदारी अलग–अलग कंपनियों की होती है। इसको लेकर कंपनियों के बीच होड़ भी देखने को मिलती है। कुछ महीने पहले खबरें आई थीं कि जाह्नवी कपूर का करियर पहले करण जौहर की धर्मा कॉर्नरस्टोन आर्टिस्ट एजेंसी मैनेज कर रही थी। लेकिन फिर जान्हवी ने अपनी एजेंसी बदल ली है। हालांकि, जान्हवी से पहले भी कई स्टार्स ऐसा कर चुके हैं। इस बीच अब करण जौहर का एक बयान सामने आया है, जिसमें उनका कहना है कि इस कंपटेटिव बिजनेस में कोई भी स्टार किसी के प्रति वफादार नहीं होता है। हाल ही में सार्थक आहूजा के साथ यूट्यूब पर एक पॉडकास्ट में करण जौहर ने टैलेंट मैनेजमेंट को लेकर बात की। उन्होंने कहा कि टैलेंट मैनेजमेंट एक थैंकलेस काम है, क्योंकि असल में कोई भी वफादार नहीं होता।

हर दो साल में लोग एक एजेंसी से दूसरी एजेंसी में चले जाते हैं, क्योंकि वे इतने इनसिक्योर महसूस करते हैं कि उन्हें लगता है कि हम समयबद्ध हैं। इस बिजनेस में कोई वफादार नहीं है। एकटर्स बस इधर–उधर भटकते रहते हैं। आप अपने जीवन के दो साल किसी टैलेंट पर लगाते हैं और वे अचानक कहीं और चले जाते हैं। फिर उन्हें वहां अच्छा नहीं लगता और वे आपके पास वापस आना चाहते हैं। यह एक दुष्चक्र है। करण जौहर का मानना है कि इस बिजनेस में केवल कलाकारों के साथ जुड़कर पैसा कमाना बहुत मुश्किल है। इसलिए लोग अब इक्विटी निवेश की ओर देख रहे हैं। कई टैलेंट एजेंसियां अपने कलाकारों के साथ इक्विटी साझेदारी कर रही हैं और उन साझेदारियों से पैसा कमाने की कोशिश कर रही हैं। कलाकारों पर केवल कमीशन से आपको कुछ नहीं मिलेगा, क्योंकि कलाकार कोई खास नहीं होते। इस व्यवसाय का 90 प्रतिशत हिस्सा लोगों, उनके अहंकार और इनसिक्योरिटी को संभालने से जुड़ा है और यह आसान नहीं है। अगर आप टैलेंट मैनेजमेंट को एक बिजनेस अपॉर्च्युनिटी के तौर पर देखेंगे, तो कुछ भी हासिल नहीं होगा। निर्माता–निर्देशक ने आगे कहा कि 31 साल इस बिजनेस में रहने के बाद मैं सफलता और असफलता के प्रति सहज हो गया हूं। मुझे लगता है कि मेरी खुशी और दुख मेरी सफलता और असफलता का परिणाम नहीं हो सकते, क्योंकि तब मैं आईसीयू में होऊंगा। करण की एजेंसी रोहित सराफ, सारा अली खान, शनाया कपूर, राशा थडानी जैसे कई स्टार्स का काम संभालती है।

जौ घास कई बीमारियों को रखे दूर, फायदे जानकर हो जाएंगे हैरान

जौ घास के रस में भरपूर मात्रा में फाइबर पाए जाते हैं, जो फास्टिंग ब्लड शुगर कम करने और ब्लड शुगर को कंट्रोल करने में मदद हैं। जौ घास में सैपोनारिन पाया जाता है, जो भोजन के बाद ब्लड ग्लूकोज को नियंत्रित कर सकता है।

बहुत सालों से जौ की खेती हो रही है। जौ एक ग्लूटेन फ्री अनाज है, जौ घास सिर्फ घास नहीं है। यह एक सुपरफूड है। जौ की घास बहुत ही फायदेमंद और कई पोषक तत्वों से भरपूर होती है। जौ की घास में विटामिन, मिनरल्स और फाइबर भरपूर मात्रा में होते हैं। जौ की घास का रस आसानी से पचने योग्य होता है। बार्ली ग्रास का सेवन हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है और ब्लड शुगर को भी कंट्रोल करता है। जौ की घास का रस वजन घटाने में भी सहायक होता है। आइए जानते हैं जौ घास के कितने फायदे हैं–

वजन घटाने में सहायक

पोषण विशेषज्ञ के अनुसार, जौ घास का रस मेटाबॉलिज्म को बढ़ावा देकर वजन घटाने में सहायता करता है। इसके एंटीऑक्सीडेंट और कैलोरी कम होने के कारण यह वजन को मैनेज करने में सहायक होता है।

इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है

जौ घास का रस प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत रखता है और शरीर को अनेक बीमारियों से बचाए रखने में मदद करता है। यह रोगों से लड़ने में हमारी सहायता करता है। जौ घास का जूस एंटीजन का पता लगाने में सहायता करता है और एंटीजन के संपर्क में आने पर बीमारी को रोकने के लिए शरीर की इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है।

मधुमेह को करता है कंट्रोल

जौ घास के रस में भरपूर मात्रा में फाइबर पाए जाते हैं, जो फास्टिंग ब्लड शुगर कम करने और ब्लड शुगर को कंट्रोल करने में मदद हैं। जौ घास में सैपोनारिन पाया जाता है, जो भोजन के बाद ब्लड ग्लूकोज को नियंत्रित कर सकता है। एक्सपर्ट की सलाह पर मधुमेह के मरीज इसका सेवन कर सकते हैं।

लिवर की करता है सफाई

जौ घास में क्लोरोफिल होता है। यह शरीर से विषाक्त पदार्थों को खत्म करने और लीवर की सफाई करने का काम करता है। इसके अलावा इसमें कई एंजाइम होते हैं जो पाचन को बेहतर बनाते हैं। इनके अलावा जौ घास में एंटी इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो आंतों की परत को ठीक करके पेट और आंत के रोगों का इलाज करते हैं।

त्वचा के लिए फायदेमंद

जौ घास एंटीऑक्सिडेंट से भरपूर होती है। जौ घास का रस शरीर को फ्री रेडिकल्स से निपटने के लिए जरूरी पोषक तत्व प्रदान करता है, जो हमारी त्वचा के फायदेमंद होती है।

ब्लड प्रेशर को करता है नियंत्रित

जौ घास ब्लड प्रेशर के मरीजों के लिए भी यह फायदेमंद माना जाती है। जौ घास में बहुत ऐसे तत्व पाए जाते हैं जो ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करते है। एक्सपर्ट की सलाह पर ब्लड प्रेशर के मरीज इसका सेवन कर सकते हैं।

शाकाहारी लोग प्रोटीन के लिए खाएं ये सुपरफूड, कमजोरी होगी छूमंतर

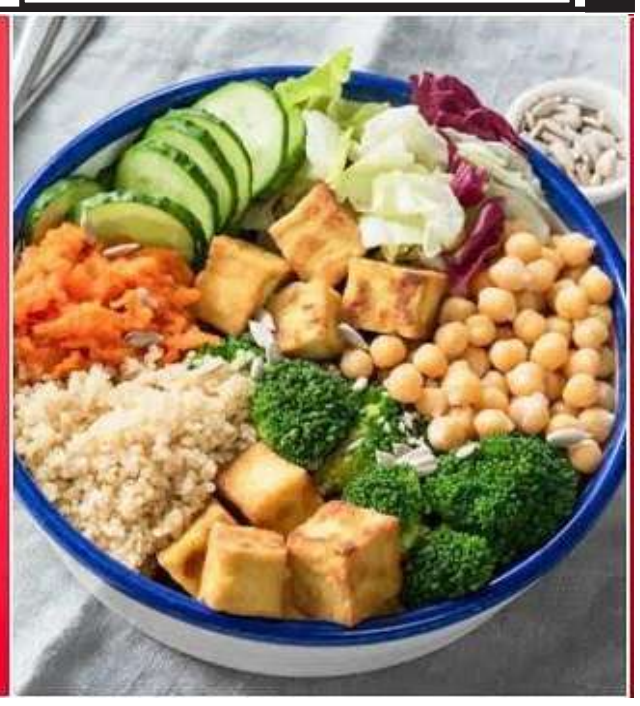

आजकल बहुत से लोग शाकाहारी भोजन अपनाते हैं, लेकिन अक्सर एक सवाल मन में आता है क्या बिना मांस–मछली खाए शरीर को पूरा प्रोटीन मिल सकता है? अगर आपको भी जल्दी थकान, कमजोरी, बाल झड़ना या मांसपेशियों में ढीलापन महसूस होता है, तो संभव है कि आपके शरीर में प्रोटीन की कमी हो। अच्छी बात यह है कि शाकाहारी भोजन में भी प्रोटीन के कई बेहतरीन स्रोत मौजूद हैं। आइए जानते हैं कि शाकाहारी लोग किन चीजों को खाकर अपनी कमजोरी दूर कर सकते हैं।

दालें दृ हर दिन की ताकत

दालें भारतीय रसोई का सबसे अहम हिस्सा हैं। अरहर, मूंग, मसूर, उड़द जैसी दालें प्रोटीन का बहुत अच्छा स्रोत होती हैं। एक कटोरी पकी हुई दाल में लगभग 7,9 ग्राम प्रोटीन होता है। अगर आप रोजाना दाल का सेवन करते हैं, तो शरीर को जरूरी अमीनो एसिड मिलते हैं, जिससे मांसपेशियां मजबूत होती हैं और कमजोरी धीरे–धीरे कम होने लगती है। दाल को चावल या रोटी के साथ खाने से प्रोटीन की गुणवत्ता और भी बेहतर हो जाती है।

दाल में नहीं लगेगा कीड़ा, जानिए 6 घरेलू तरीके जो एक साल तक रखेंगे दाल को सुरक्षित

चना और राजमाः ताकत का खजाना

चना, काला चना और राजमा प्रोटीन से भरपूर होते हैं। एक कप उबले हुए चने में लगभग 14,15 ग्राम प्रोटीन मिल सकता है। इन्हें आप सब्जी, सलाद या चाट के रूप में खा सकते हैं। नियमित सेवन से शरीर में ऊर्जा बनी रहती है और बार–बार थकान महसूस नहीं होती।

दूध और पनीरः शाकाहारियों का सुपरफूड

दूध, दही और पनीर प्रोटीन के बहुत अच्छे स्रोत हैं। खासकर पनीर में भरपूर मात्रा में प्रोटीन और कैल्शियम होता है। 100 ग्राम पनीर में लगभग 18,20 ग्राम प्रोटीन मिल सकता है। अगर आप जिम जाते हैं या शारीरिक मेहनत ज्यादा करते हैं, तो पनीर को अपनी डाइट में जरूर शामिल करें। इससे मांसपेशियां मजबूत बनती हैं और कमजोरी दूर होती है।

सोया और टोफू दृ प्रोटीन का पावर पैक

सोयाबीन और सोया चंक्स में बहुत ज्यादा प्रोटीन होता है। 100 ग्राम सोया चंक्स में लगभग 50 ग्राम तक प्रोटीन हो सकता है। टोफू (सोया से बना पनीर) भी एक बेहतरीन विकल्प है। इसे सब्जी या सलाद में शामिल किया जा सकता है। जो लोग मांस नहीं खाते, उनके लिए सोया एक शानदार विकल्प है।

मूंगफली और ड्राई फ्रूट्सः छोटा पैकेट, बड़ी ताकत

मूंगफली, बादाम, काजू और अखरोट में भी अच्छी मात्रा में प्रोटीन और हेल्दी फैट्स होते हैं। रोजाना एक मुट्ठी ड्राई फ्रूट्स खाने से शरीर को ऊर्जा मिलती है और कमजोरी दूर रहती है। मूंगफली या पीनट बटर को आप नाश्ते में शामिल कर सकते हैं।

ओट्स और क्विनोआः हेल्दी और प्रोटीन से भरपूर

ओट्स और क्विनोआ जैसे अनाज भी प्रोटीन के अच्छे स्रोत हैं। क्विनोआ में सभी जरूरी अमीनो एसिड पाए जाते हैं, जो शरीर के लिए बहुत फायदेमंद हैं। सुबह नाश्ते में ओट्स या क्विनोआ लेने से दिनभर ऊर्जा बनी रहती है और कमजोरी महसूस नहीं होती।

प्रोटीन की कमी के लक्षण क्या हैं?

अगर शरीर में प्रोटीन की कमी हो जाए, तो ये लक्षण दिखाई दे सकते हैं थोड़ी मेहनत में थकान होना, बालों का झड़ना, मांसपेशियों में कमजोरी, बार–बार बीमार पड़ना, वजन का तेजी से घटना। ऐसे में तुरंत अपनी डाइट पर ध यान देना जरूरी है।

एक दिन में कितना प्रोटीन जरूरी है?

आमतौर पर एक स्वस्थ व्यक्ति को उसके वजन के प्रति किलो पर लगभग 0.8 से 1 ग्राम प्रोटीन की जरूरत होती है। अगर आपका वजन 60 किलो है, तो आपको रोजाना लगभग 48,60 ग्राम प्रोटीन लेना चाहिए। जो लोग जिम जाते हैं या ज्यादा शारीरिक मेहनत करते हैं, उन्हें इससे थोड़ा ज्यादा प्रोटीन की जरूरत पड़ सकती है।

कैसे बनाएं संतुलित शाकाहारी डाइट?

केवल एक ही चीज पर निर्भर न रहें। दाल, चना, दूध, पनीर, सोया, ड्राई फ्रूट्स और अनाज दृ इन सबको मिलाकर खाएं। जब अलग–अलग स्रोतों से प्रोटीन मिलता है, तो शरीर को सभी जरूरी पोषक तत्व मिलते हैं और कमजोरी दूर होती है। शाकाहारी होने का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि आपको प्रोटीन की कमी होगी। सही जानकारी और संतुलित आहार से आप पूरी ताकत और ऊर्जा पा सकते हैं। अगर आप रोजाना अपने भोजन में प्रोटीन से भरपूर चीजें शामिल करेंगे, तो कुछ ही समय में कमजोरी "छूमंतर" हो सकती है।

शरीर को करना है नैचुरली डेटॉक्स तो रुटीन में करें ये 5 काम

सांस लेने से लेकर, खाने और सोने तक सब कुछ हमारा शरीर और उसके कई अंग कई काम करते हैं। यह बिना रुके काम करता है। इससे शरीर में बहुत सारे गंदे पदार्थ जमा हो जाते हैं। यही कारण है कि शरीर की भीतरी सफाई जरुरी है। ऐसे में शरीर को डिटॉक्स करना जरुरी है। डिटॉक्स करने से शरीर में मौजूद विषाक्त पदार्थ बाहर निकलते हैं। बॉडी को हैल्दी और नैचुलर तरीके से डिटॉक्स करना चाहिए। इसके लिए आप एक्सरसाइज कर सकते हैं और कुछ हेल्दी फूड्स को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं। इसके अलावा शरीर को डिटॉक्स करने के लिए आप रुटीन में कुछ आदतों को शामिल कर सकते हैं। आइए जानते हैं इनके बारे में।

शरीर को रखें हाइड्रेट

बॉडी को डिटॉक्स करने के लिए अपने दिन की शुरुआत एक गिलास पानी के साथ करें। शरीर में से यूरिया और कार्बन डाइऑक्साइड जैसे जहरीले पदार्थों को बाहर निकालने के लिए हाइड्रेटेड रहना जरुरी है। सुबह के समय एक गिलास गर्म या ठंडे पानी में निचोड़ा हुआ नींबू पिएं। इससे आपकी बॉडी हाइड्रेटेड रहेगी और पाचन को भी स्वस्थ रहेगा। नींबू में पैक्टिन नाम का एक घुलनशील फाइबर मौजूद होता है ऐसे में यह पानी को एक डिटॉक्स ड्रिंक बनाता है।

एक्सरसाइज करें

सिर्फ हेल्दी डाइट ही नहीं बल्कि शरीर को डिटॉक्सीफाई करनेके लिए नियमित एक्सरसाइज भी जरुरी है। रुटीन में एक्सरसाइज करने से शरीर में मौजूद विषाक्त पदार्थ बाहर निकलेंगे। जब शरीर में पसीना आता है तो शरीर में से आर्सेनिक, निकेल, मर्करी और तांबा जैसी धातुएं निकलती हैं जिससे शरीर को डिटॉक्सीफाइ करने में मदद मिलती है।

शराब से बनाएं दूरी

शराब का सेवन करने से आपके शरीर में से डिटॉक्सीफिकेशन प्रभावित हो सकती है। शराब का सेवन करने से लीवर को आपके शरीर में पेय पदार्थों में मौजूद इथेनॉल को हटाने के लिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है जिसके कारण मेटाबॉलिक प्रभावित होता है। ज्यादा मात्रा में शराब पीने के कारण लीवर को ओवरटाइम करना पड़ता है जिसके कारण बाकी अंगों पर असर होता है डिटॉक्सीफिकेशन स्लो होती है।

डाइट का रखें ध्यान

बॉडी को डिटॉक्स करने के लिए डाइट का ध्यान रखना जरुरी है। डाइट में ऐसे फूड्स को शामिल करें जो एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर हों जैसे फलियां, जामुन, ब्रोकली और खट्टे फल का सेवन कर सकते हैं। यह शरीर की कोशिकाओं को तनाव से बचाते हैं। इसके अलावा सब्जियां, मेवे, साबुत अनाज, फल और मसालों को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं।

पूरी नींद लें

नींद आपके शरीर को नैचुरली तरीके से डिटॉक्सीफाई करने में मदद करती है। जब आपकी नींद पूरी नहीं होती तो शरीर सामान्य से कम क्षमता के साथ काम करता है। शरीर पूरे दिन काम करता है ऐसे में इसे स्वस्थ रखने के लिए इसे अच्छी तरह से कामकाज और अच्छी नींद की जरुरत है।

आपकी ये आदतें आंखों को बना देगी कमजोर, अभी से कर लें इन पर गौर

ज्यादा देर तक मोबाइल चलाने, लैपटॉप पर घंटों बिताने के कारण आंखों की रोशनी कमजोर हो रही है। जहां पहले बढ़ती उम्र का असर आंखों पर पड़ता था वहीं आजकल ज्यादा स्क्रीन पर समय बिताने के कारण छोटी उम्र में सभी को चश्मा लग रहा है। इसके अलावा भी कुछ ऐसी आदतें हैं जो आपकी आंखों को कमजोर बना सकती हैं। इन आदतों को नजरअंदाज करने के कारण उम्र से पहले ही आपको चश्मा लग सकता है। आइए जानते हैं इनके बारे में।

ज्यादा फोन इस्तेमाल करना

आजकल सभी का ज्यादातर समय फोन पर ही बिता रहा है। ऐसे में आंखें ड्राई हो जाती है, धुंधली आंखों की रोशनी और अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती है। डिजिटल स्क्रीन सेफ्टी चश्मे से कंप्यूटर आई स्ट्रेस से आप निपट सकते हैं। इसके अलावा आपको स्क्रीन टाइम के घंटों को भी कम करना होगा। स्क्रीन से दूर देखने के लिए 20 मिनट तक का ब्रेक लें, दूर की किसी चीज को देखें और अपनी आंखों को आराम दें। आंखों को चिकनाई देने के लिए लगभग दस बार धीरे–धीरे पलकें झपकाएं।

अनहेल्दी खान–पान

डाइट में ऐसी चीजें शामिल करने से जो अनहेल्दी हो उसके कारण भी आंखों की रोशनी को नुकसान पहुंच सकता है। सिर्फ स्वस्थ शरीर ही नहीं बल्कि आंखों की रोशनी सही रखने के लिए भी डाइट का ध्यान रखना जरुरी है।

कम पानी पीने के कारण

यदि आप कम मात्रा में पानी पीते हैं तो इसके कारण आपकी आंखों में पानी की कमी हो सकती है। इसके कारण आंखें सूजी, ड्राई और लाल होने लगेगी। डिहाइड्रेशन के कारण आंखों में आंसू भी नहीं आएंगे।

धूप का चश्मा न पहनना

यदि आप धूप में जाते हैं और चश्मा नहीं पहनते तो आपकी आंखे हानिकारक यूवी किरणों की संपर्क में आ सकती है जिसके कारण आंखे कमजोर हो सकती हैं।

बार–बार आंखें मलना

यदि आप अपनी आंखों को बार–बार रगड़ते हैं तो भी यह खराब हो सकती हैं। आंखे मलने के कारण मायोपिया और ग्लूकोमा की स्थिति खराब हो सकती है जिसके सीधा असर आंखों पर पड़ता है।

धूम्रपान

धूम्रपान करने का सीधा असर भी आंखों पर पड़ता है। इसके कारण आइ कंडिशन रिस्क मैक्यूलर डिजनरेशन, ग्लूकोमा, ड्राई आई और मोतियाबंद जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इसके अलावा धूम्रपान न करने वालों की तुलना में धूम्रपान करने वाले लोगों में मैक्यूलर डिजनरेशन होने की ज्यादा संभावना होती है।

ऐसा हुआ तो बिना जीते भी सेमीफाइनल में पहुंचेगा वेस्टइंडीज

नई दिल्ली,एजेंसी। टी20 विश्वकप 2026 अपने सबसे रोमांचक दौर में पहुंच चुका है। सेमीफाइनल के लिए जंग रोमांचक हो चली है। भारत के जिम्बाब्वे को हराते ही दक्षिण अफ्रीका की टीम अंतिम–चार में पहुंच गई। वहीं, इंग्लैंड की टीम पहले ही सेमीफाइनल में पहुंच चुकी है। अब दो स्थानों के लिए जंग है। भारत और वेस्टइंडीज के बीच एक मार्च को कोलकाता में नॉकआउट मुकाबला खेला जाएगा। वहीं, दूसरे स्थान के लिए न्यूजीलैंड और पाकिस्तान में टक्कर है। अगर न्यूजीलैंड ने शुक्रवार को इंग्लैंड को हरा दिया तो उनकी सीट पक्की हो जाएगी। वहीं, इस मैच में अगर इंग्लैंड जीता तो पाकिस्तान के लिए भी रास्ते खुल जाएंगे। फिर उन्हें एक तय मार्जिन से अपने आखिरी सुपर–8 मैच में श्रीलंका को हराना होगा। हालांकि, इन सबके बीच एक समीकरण ऐसा भी है, जिससे भारत को खतरा है। अगर ऐसा हुआ तो वेस्टइंडीज को भारत के खिलाफ जीत हासिल करने की जरूरत नहीं होगी, बिना जीते ही कैरिबियाई टीम सेमीफाइनल में पहुंच जाएगी।

दरअसल, भारत ने जिम्बाब्वे के खिलाफ मुकाबले में एक बहुत बड़ी गलती की। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हार के बाद टीम ने बल्लेबाजी तो सुधारी, लेकिन गेंदबाजी फींकी पड़ गई। भारत ने जिम्बाब्वे के खिलाफ 256 रन बना दिए, लेकिन कागज पर कमजोर जिम्बाब्वे की बल्लेबाजी को भारतीय गेंदबाज जल्द से जल्द समेटने में कामयाब नहीं हो सके। भारत के 257 रन के लक्ष्य के जवाब में जिम्बाब्वे ने 20 ओवर में छह विकेट पर 184 रन बना डाले। टीम इंडिया ने यह मैच 72 रन से जरूर जीता, लेकिन नेट रन रेट अभी भी निगेटिव ही है। भारत –3.80 से –0.100 तक पहुंच पाया।

यह एक ऐसा मैच या फिर यूं कहें 256 का स्कोर एक ऐसा स्कोर था, जहां भारत को अपना नेट रन रेट बेहतर करने का मौका था। अगर भारतीय टीम जिम्बाब्वे को जल्द से जल्द समेटती तो नेट रन रेट वेस्टइंडीज के आसपास करने का मौका था। ऐसा इसलिए क्योंकि दक्षिण अफ्रीका ने वेस्टइंडीज को नौ विकेट से करारी शिकस्त दी थी। इससे वेस्टइंडीज का नेट रन रेट 5.35 से गिरकर 1.791 हो गया। 100 रन से जीत भारत को नेट रन रेट में वेस्टइंडीज के आसपास ले जा सकती थी।

भारत ने शिवम दुबे से जबरदस्ती दो ओवर करवाए, जबकि जसप्रीत बुमराह और हार्दिक पांड्या के एक–एक ओवर बाकी थे। इन दो ओवरों में शिवम दुबे ने 46 रन खर्च कर दिए। उन्हें एक विकेट जरूर मिला, पर टीम मैनेजमेंट का यह फैसला समझ से परे था। जहां टीम इंडिया को रन रोकने थे, वहां जबरदस्ती रन लुटाए गए। अगर यही दो ओवर हार्दिक और बुमराह से कराए जाते तो हो सकता था कि सिर्फ 10–15 रन बनते और भारत की जीत 100 रन की होती। हालांकि, ऐसा नहीं हुआ।

टीम इंडिया को इतने बड़े स्कोर के बाद जिम्बाब्वे पर दबाव बनाना चाहिए था, जैसा वेस्टइंडीज ने किया था और 254 के जवाब में 147 रन पर जिम्बाब्वे की पारी को समेट दिया था। तब वेस्टइंडीज ने 107 रन से जीत हासिल की थी और उनका नेट रन रेट 5.35 हो गया था। 110 या 120 रन से जीत भारतीय टीम को वेस्टइंडीज के मौजूदा नेट रन रेट के करीब या उसके पार ले जा सकती थी। भारत और वेस्टइंडीज , दोनों के अंक फिलहाल दो–दो हैं। पर भारत से रणनीति में भारी चूक हो गई। अब भारत–वेस्टइंडीज नॉकआउट तो है, लेकिन इस नॉकआउट के साथ एक खतरा और है और वह खतरा है–बारिश से मैच धुलने का डर। क्या टीम मैनेजमेंट को इस बारे में नहीं सोचना चाहिए था?

यह तो तय है कि भारत और वेस्टइंडीज के बीच कोलकाता के ईडन गार्डेन्स में एक मार्च को जो जितेगा, वह सेमीफाइनल में पहुंच जाएगा। पर अगर बारिश ने खलल डाला और मैच धुला तो भारत टूर्नामेंट से बाहर हो जाएगा। बारिश से बाधित मैच में डकवर्थ लुईस नतीजे के लिए दोनों पारियों में कम से कम पांच–पांच ओवर का खेल जरूरी है। हालांकि, ऐसा संभव नहीं हो पाया और पूरे मैच में बारिश हुई और खेल नहीं हो पाया तो वेस्टइंडीज बेहतर नेट रन रेट के दम पर सेमीफाइनल के लिए क्वालिफाई कर जाएगा। इस मैच के लिए कोई रिजर्व डे भी नहीं है। वेस्टइंडीज को मैच खेलने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। दोनों टीमों को एक–एक अंक जरूर मिलेंगे, लेकिन नेट रन रेट नहीं बदलेगा और बेहतर नेट रन रेट के साथ वेस्टइंडीज दक्षिण अफ्रीका के साथ अंतिम–चार में पहुंच जाएगा। यह टीम इंडिया के लिए चिंताजनक है। ऐसे में भारतीय फैंस यही मना रहे होंगे कि मैच में बारिश न हो।

एक्यूवेदर की रिपोर्ट के मुताबिक, रविवार एक मार्च को कोलकाता का मौसम साफ रह सकता है। दिन में बारिश की फिलहाल कोई संभावना नहीं दिख रही है। हालांकि, रात में बारिश की दो प्रतिशत संभावना है। वहीं, 33 प्रतिशत बादल रहने की संभावना है। यह भारतीय फैंस के लिए अच्छी खबर है। फैंस यही मना रहे हैं कि पूरा मैच हो और भारत जीत के साथ सेमीफाइनल के लिए क्वालिफाई करे। पर चिंता की बात तो यह है कि जब जिम्बाब्वे ने इतने रन बनाए हैं, तो वेस्टइंडीज के बल्लेबाज, जो इतने शानदार फॉर्म में चल रहे हैं, वो क्या हश्र करेंगे। वेस्टइंडीज ने गुरुवार को 83 पर सात विकेट गिरने के बाद 176 रन बना दिए थे। टीम इंडिया के कोच और मैनेजमेंट को जल्द से जल्द रणनीति में बदलाव और गेंदबाजी में नए प्लान की जरूरत है।

संक्षिप्त

चांदी की कीमतों में 6600 रुपये का उछाल, सोना 1.60 लाख रुपये पर पहुंचा

नई दिल्ली,एजेसी। सोने–चांदी की कीमत में तेजी देखने को मिली। चांदी की कीमत 6670 रुपये बढ़कर 2.67 लाख रुपये प्रति किलो पर पहुंच गई। वहीं सोने का भाव 110 रुपये बढ़कर 1.60 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमती धातुओं में उतार–चढ़ाव के बीच सोने और चांदी की कीमतों पर निवेशकों की करीबी नजर बनी हुई है। कॉमेक्स पर स्पॉट गोल्ड 5,199 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार करता दिखा, जो 5,200 डॉलर के स्तर से हल्की गिरावट दर्शाता है, हालांकि पिछले 24 घंटों में इसमें 0.11 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई है। वहीं शुरुआती कारोबार में चांदी 89.46 डॉलर प्रति औंस पर रही, जिसमें 2.83 फीसदी की तेजी देखी गई। मजबूत डॉलर भी सोने की तेजी पर कुछ हद तक दबाव बना रहा है। अमेरिकी डॉलर तीन हफ्तों के उच्च स्तर के करीब बना हुआ है, जिससे डॉलर में कीमत तय होने वाली बुलियन अन्य मुद्राओं के धारकों के लिए महंगी हो जाती है और खरीदारी की मांग सीमित हो सकती है। इस बीच दिग्गज ब्रोकरेज फर्म मोतीलाल ओसवाल ने सोने को लेकर बुलिश अनुमान जताया है। ब्रोकरेज के मुताबिक अगले 12 महीनों में घरेलू बाजार में सोने की कीमतें 1.85 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम तक पहुंच सकती हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि वैश्विक अनिश्चितता, केंद्रीय बैंकों की मजबूत खरीद और सुरक्षित निवेश की बढ़ती मांग सोने को समर्थन दे सकती है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि वैश्विक भू–राजनीतिक तनाव और तेज होता है, तो मध्यम अवधि में अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने की कीमतें 7,500 डॉलर प्रति औंस तक जाने की संभावना भी बन सकती है। ऐसे में निवेशकों के लिए कीमती धातुएं आगे भी सुरक्षित निवेश विकल्प के रूप में आकर्षण का केंद्र बनी रह सकती हैं।

मार्च में आएगी तेज गर्मी, गेहूं–सरसों की पैदावार पर खतरा

नई दिल्ली,एजेंसी। देश में मार्च अब तक का सबसे गर्म महीना साबित हो सकता है, जिससे गेहूं और सरसों की पैदावार कम हो सकती है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने आधिकारिक घोषणा से पूर्व बताया कि मार्च में उत्तरी और उत्तर–पश्चिमी राज्यों में अधिकतम और न्यूनतम तापमान औसत से काफी ज्यादा रह सकता है। दरअसल, दुनिया के दूसरे सबसे बड़े गेहूं उत्पादक एवं खाद्य तेल के सबसे बड़े आयातक भारत को उम्मीद है कि 2026 में फसलों की बंपर पैदावार होगी, जिससे गेहूं का ज्यादा निर्यात किया जा सकेगा और पाम, सोया एवं सूरजमुखी तेल के महंगे आयात में कटौती करने में मदद मिलेगी। हालांकि, अनाज भरने और पकने के जरूरी चरणों के दौरान ज्यादा तापमान फसलों की पैदावार में कमी ला सकती है। इससे कुल उत्पादन घट सकता है, जिसके रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचने की उम्मीद है। आईएमडी इस सप्ताह के अंत तक मार्च के तापमान को लेकर अपना अनुमान जारी कर सकता है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के एक अन्य अधिकारी ने कहा, अगले कुछ दिनों में दिन का पारा बढ़ने लगेगा और मार्च के अंत तक कई राज्यों में अधिकतम तापमान बढ़कर 40 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच सकता है। मार्च में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में अधिकतम तापमान सामान्य से 7 डिग्री सेल्सियस तक ज्यादा रह सकता है। अधिक तापमान से इन राज्यों में गेहूं और सरसों की फसलें प्रभावित होंगी, जिनकी अच्छी पैदावार के लिए ठंडे मौसम की जरूरत होती है। भारत ने 2022 में गेहूं के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था, क्योंकि फरवरी और मार्च में गर्मी की वजह से पैदावार प्रभावित हुई थी। मुंबई की ब्रोकरेज फर्म फिलिप कैपिटल इंडिया में कमोडिटी रिसर्च के उपाध्यक्ष अश्विनी बंसोड़ ने कहा, मार्च के पहले आधे हिस्से में लगातार सामान्य से ज्यादा तापमान रहने से गर्मी का तनाव बढ़ सकता है। यह इसलिए भी चिंतित करने वाली बात है कि किसानों ने इस साल रिकॉर्ड क्षेत्रफल में गेहूं और सरसों की बुवाई की है।

लाल निशान पर खुला घरेलू शेयर बाजार, सेंसेक्स 365 अंक टूटा

नई दिल्ली,एजेंसी। वैश्विक बाजारों में कमजोरी के रुझान और विदेशी निधियों की नई निकासी के चलते शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में बेंचमार्क सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी में गिरावट दर्ज की गई। शुरुआती कारोबार में 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 364.62 अंक गिरकर 81,883.99 पर आ गया। वहीं, 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 117.15 अंक गिरकर 25,379.40 पर पहुंच गया। शुरुआती कारोबार में रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 4 पैसे गिरकर 90.95 पर आ गया। सेंसेक्स पैक में, मारुति, भारती एयरटेल, हिंदुस्तान यूनिलीवर, महिंद्रा एंड महिंद्रा, कोटक महिंद्रा बैंक और अल्ट्राटेक सीमेंट प्रमुख रूप से पिछड़ने वाले शेयरों में शामिल थे। इंफोसिस, टेक महिंद्रा, एचसीएल टेक और इटरनल लाभ कमाने वाली कंपनियों में शामिल थीं। एशियाई बाजारों में, दक्षिण कोरिया का कोस्पी, जापान का निक्केई 225 और शंघाई का एसएसई कंपोजिट इंडेक्स नीचे कारोबार कर रहे थे, जबकि हांगकांग का हैंग सेंग इंडेक्स सकारात्मक दायरे में कारोबार कर रहा था। गुरुवार को अमेरिकी बाजार अधिकतर गिरावट के साथ बंद हुआ। ऑनलाइन ट्रेडिंग और वेल्थ टेक फर्म एनरिच मनी के सीईओ पोनमुडी आर ने कहा कि ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर हाल ही में हुई अमेरिका–ईरान वार्ता बिना किसी सफलता के समाप्त हो गई, जिससे अमेरिकी हमले की संभावना और व्यापक पश्चिम एशिया संघर्ष के जोखिम को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं।

क्या किसान का बेटा बदलेगा जिम्बाब्वे की तकदीर ?

नई दिल्ली,एजेंसी। जब जिम्बाब्वे क्रिकेट अपने सबसे कठिन दौर से गुजर रहा था, तब देश को एक नए चेहरे, एक नई उम्मीद की तलाश थी। बड़े नाम विदा ले चुके थे, सपने बिखर चुके थे और भरोसा डगमगा रहा था। ऐसे समय में हरारे के एक साधारण घर से उठी गेंद–बल्ले की आवाज अब विश्व मंच तक गूंज रही है। 22 वर्षीय ब्रायन बेनेट आज जिम्बाब्वे की नई सुबह का प्रतीक बन चुके हैं। वह जिम्बाब्वे क्रिकेट के टूटते सपनों के बीच एक नई किरण बनकर उभरे हैं। वह न तो किसी अकादमी से उभरे, न किसी बड़े वादे से जाने गए, बल्कि घर के पिछले हिस्से में लगे छोटे से नेट पर अभ्यास कर विश्व मंच तक पहुंचे। उस नेट में वह और उनके भाई घंटों क्रिकेट खेलते थे, बिना यह सोचे कि एक दिन वह देश की नई उम्मीद बन जाएंगे। जब से टी20 विश्वकप टूर्नामेंट (2007 से) शुरू हुआ है, कभी ऐसा नहीं हुआ कि कागज पर कमजोर दिखने वाली टीम का बल्लेबाज टूर्नामेंट के शीर्ष पांच सबसे ज्यादा रन बनाने वालों में शामिल हो। पर ब्रायन बेनेट ने यह कर दिखाया। वह टूर्नामेंट के इस संस्करण में सबसे ज्यादा रन बनाने वालों में दूसरे नंबर पर हैं। उन्होंने पांच मैचों की पांच पारियों में 277 की औसत से 277 रन बनाए। इनमें तीन अर्धशतक शामिल हैं। उनका स्ट्राइक रेट 135.78 का रहा। इस दौरान उन्होंने 31 चौके और छह छक्के लगाए। ये सभी छह छक्के उन्होंने गुरुवार को भारत के खिलाफ पारी के दौरान लगाए हैं। भारत के खिलाफ उन्होंने 59 गेंद में आठ चौके और छक्के की मदद से और 164.41 के स्ट्राइक रेट से नाबाद 97 रन की पारी खेली। 22 साल का यह लड़का ओपनिंग करने उतरा और नॉटआउट रहा। यह पहली बार नहीं था कि ब्रायन ओपनिंग करने उतरे और आखिरी तक नॉटआउट रहे। इस विश्वकप में उनकी पांच पारियों में चार बार ऐसा हुआ, जब वह नॉटआउट पवेलियन लौटे। वह एक बार आउट सिर्फ वेस्टइंडीज के खिलाफ हुए। 22 साल में इतनी मैच्योरिटी शायद ही किसी बल्लेबाज में दिखी हो। उनकी बाकी पारियों में एक भी छक्का नहीं था, लेकिन भारत की मजबूत गेंदबाजी लाइन अप के सामने उन्होंने यह कमी भी पूरी कर दी। वह शतक से चूक गए, लेकिन पूरी दुनिया के फैंस के दिल जीत गए। इस विश्वकप में ब्रायन की पारियां– नाबाद 48 रन, नाबाद 64 रन, नाबाद 63 रन, पांच रन और नाबाद 97 रन की रही हैं। ब्रायन बेनेट कभी टीवी के सामने बैठकर कवर ड्राइव गिनने वाला बच्चों में नहीं गिने जाते थे। न ही दीवारों पर क्रिकेटरों के पोस्टर लगाने वालों में रहे, न ही उन्होंने बचपन में कोई बड़ी घोषणा कि मैं देश के लिए खेलूंगा, ये करूंगा, वो करूंगा। उनके लिए क्रिकेट की शुरुआत घर के पिछले हिस्से में लगे एक छोटे से नेट से हुई, जहां सामने उनके जुड़वां भाई खड़े होते थे और गेंद–बल्ले की आवाज घंटों गूंजती रहती थी। आज वही 22 वर्षीय ब्रायन बेनेट जिम्बाब्वे क्रिकेट की नई पहचान बन चुके हैं।

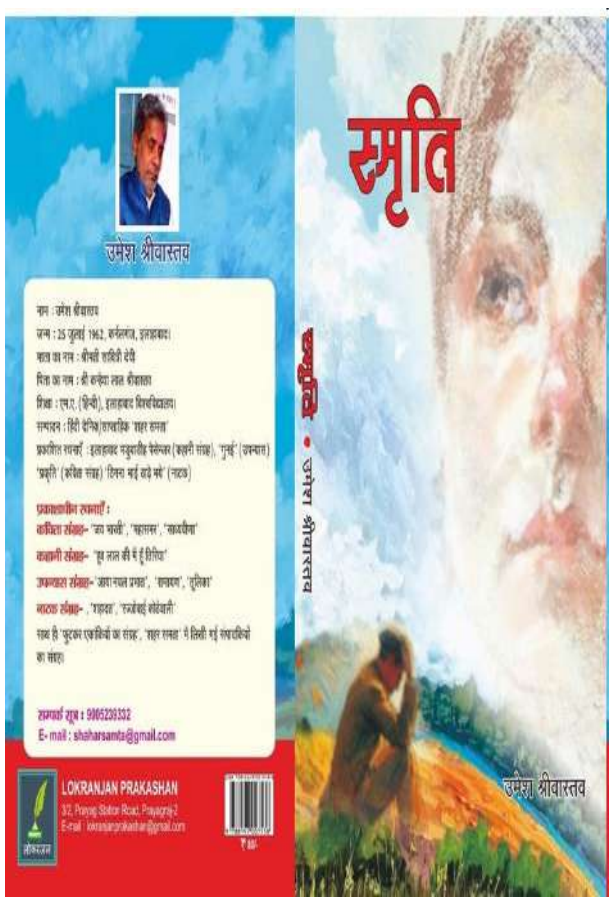

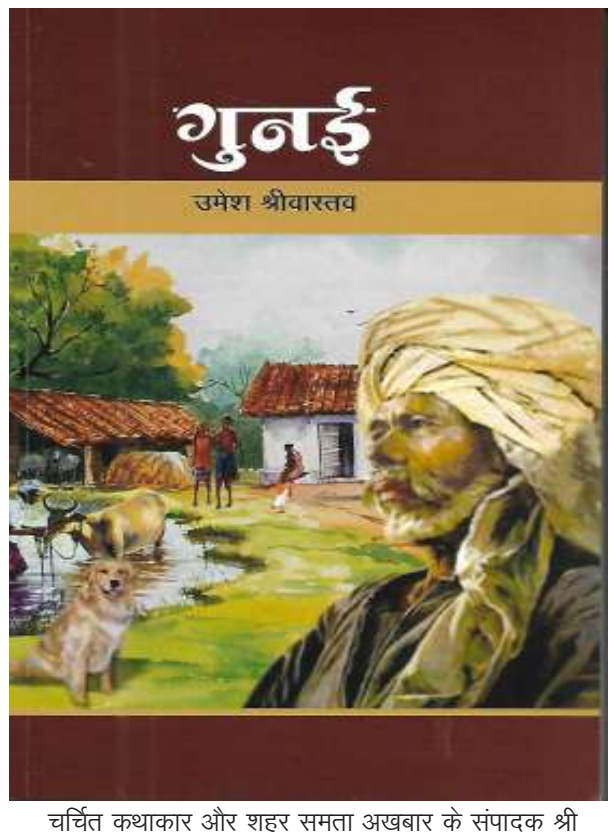

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

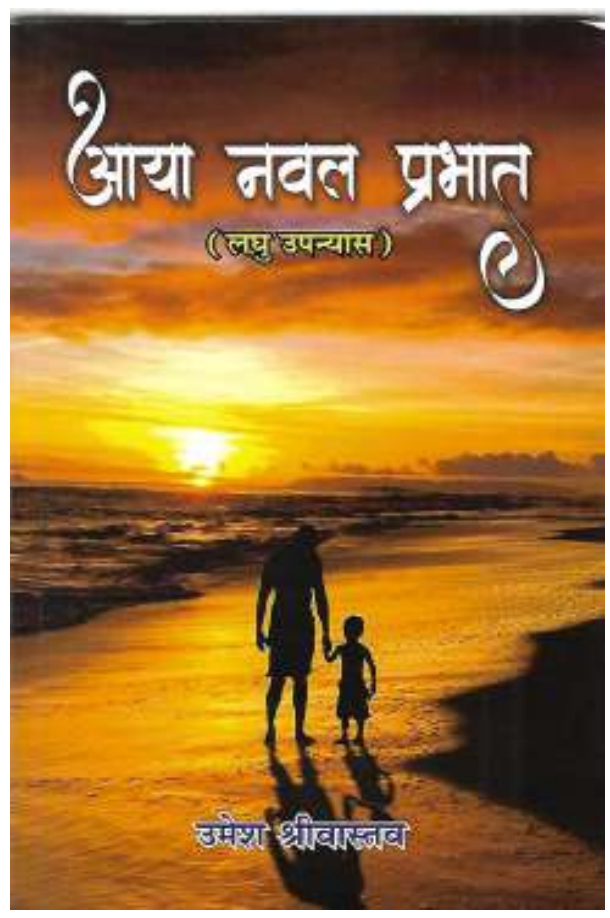

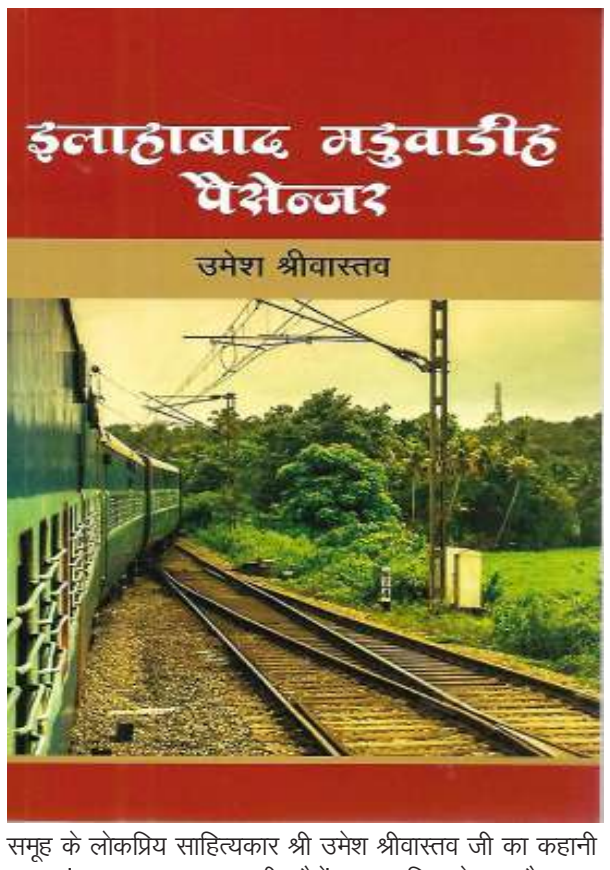

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

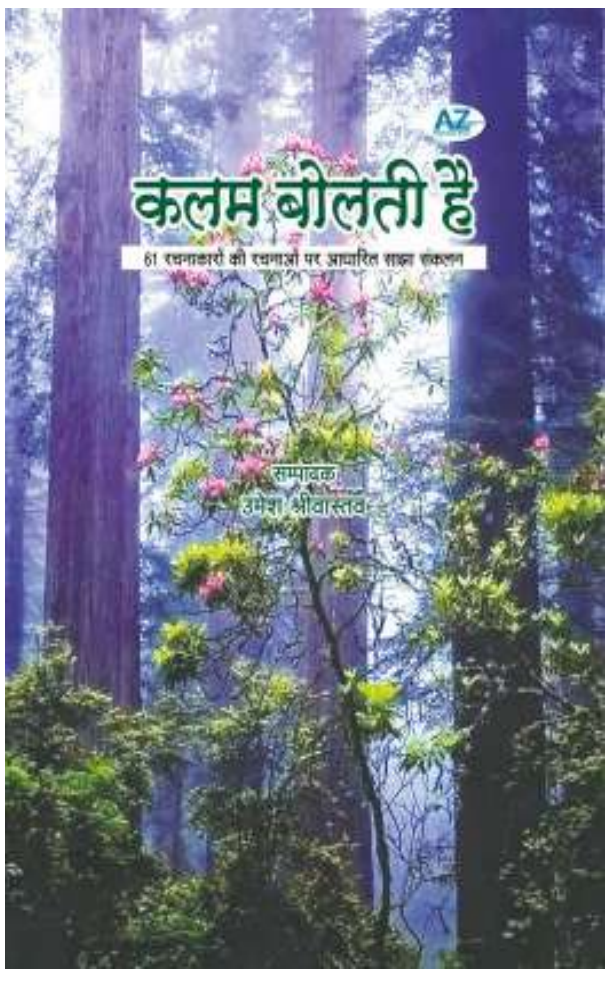

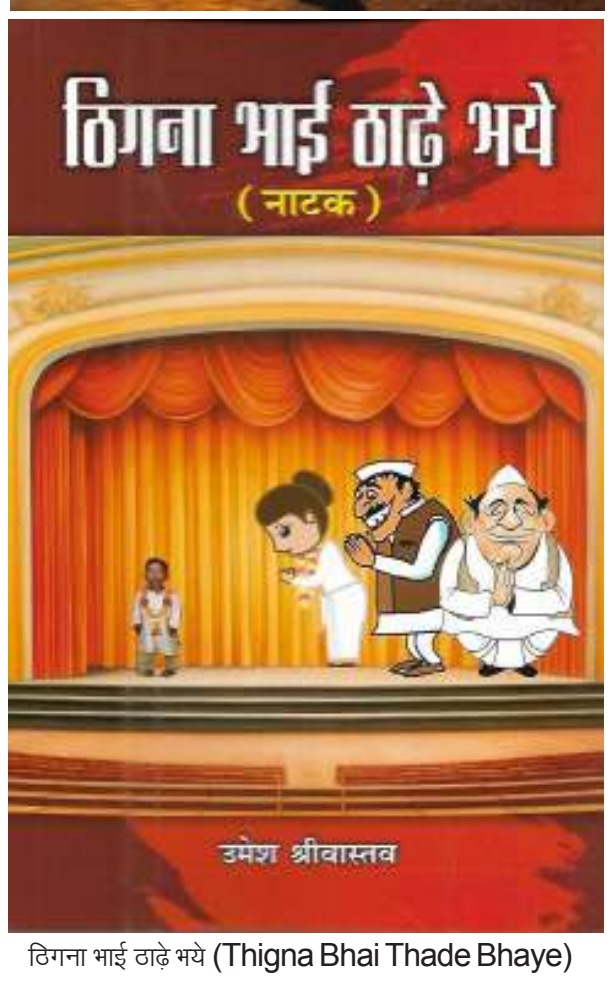

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

न्यूयॉर्क के मेयर ममदानी ने राष्ट्रपति ट्रंप से की मुलाकात, दिया नकली अखबार

वॉशिंगटन, एजेंसी। न्यूयॉर्क शहर के मेयर जोहरान ममदानी ने गुरुवार को व्हाइट हाउस की यात्रा के दौरान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने ट्रंप को एक

नकली अखबार का मुखपृष्ठ भेंट किया, ताकि शहर में बड़े पैमाने पर नए आवास निवेश पर चर्चा की जा सके। यह रणनीति डोनाल्ड ट्रंप को लुभाने के लिए बनाई गई है, जो अपनी मीडिया कवरेज को लेकर काफी चौकन्ने रहते हैं। रिपब्लिकन राष्ट्रपति और डेमोक्रेटिक मेयर के बीच पिछले साल हुई पहली मुलाकात के बाद से सौहार्दपूर्ण संबंध बने हुए हैं। जोहरान ममदानी की संचार निदेशक अन्ना बहर ने बताया कि मेयर की टीम ने ट्रंप को दिखाने के लिए एक नकली मुखपृष्ठ और सुर्खियां तैयार कीं। जिससे उन्हें पता चले कि नए संघीय आवास निवेश से किस तरह की प्रतिक्रिया हो सकती है। नकली न्यूयॉर्क डेली न्यूज के मुखपृष्ठ पर लिखा है, श्ट्रंप ने शहर से कहारू चलो निर्माण करें।श यह 1975 के उस मशहूर मुखपृष्ठ का एक व्यंग्यात्मक रूप है, जिस पर लिखा था, श्फोर्ड ने शहर से कहारू मर जाओ।श जो जेराल्ड फोर्ड की ओर से शहर को वित्तीय सहायता पर रोक लगाने की कसम का संदर्भ था। न्यूयॉर्क के मेयर ने ट्रंप के साथ अखबारों के पहले पन्नों वाली बैठक की तस्वीर अपने सोशल मीडिया पेज पर पोस्ट की। बहर ने कहा कि ट्रंप, ममदानी के प्रस्ताव को लेकर बेहद उत्साहित थे। इस प्रस्ताव के तहत क्वींस के सनसाइड यार्ड में रेल यार्ड के ऊपर एक डेक बनाने के लिए 21 अरब डॉलर से अधिक के संघीय अनुदान प्राप्त करके 12,000 नए किफायती घर बनाए जा सकेंगे। मेयर कार्यालय का अनुमान है कि इस परियोजना से 30,000 नौकरियां पैदा हो सकती हैं और यह पिछले 50 वर्षों में आवास और बुनियादी ढांचे में किया गया सबसे बड़ा निवेश होगा। बहर ने बताया कि जब ट्रंप और ममदानी की आखिरी मुलाकात नवंबर में हुई थी, तब राष्ट्रपति ने ममदानी को न्यूयॉर्क शहर में मिलकर बड़ी–बड़ी चीजें बनाने के विचार के साथ उनके पास वापस आने के लिए प्रोत्साहित किया था।

जो होना है, वह हमने बता दिया, यूरेनियम संवर्धन पर ईरानी विदेश मंत्री अराघची की अमेरिका को दो टूक

जिनेवा, एजेंसी। अमेरिका और ईरान के बीच जारी तनाव के दौरान जिनेवा में दोनों देशों ने वार्ता की। कई घंटों की बैठक के बाद ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि यह गहरी चिंता भरी लंबी बातचीतों में से एक है। जिनेवा में अब तक हुई इन चर्चाओं के बाद कोई समझौता नहीं हो सका, जिससे पश्चिम एशिया में फिर से युद्ध की आशंका बनी हुई है। अब्बास अराघची ने गुरुवार को ईरानी सरकारी टीवी से बातचीत में कहा कि जो कुछ होना है, वह हमारी ओर से साफ कर दिया गया है। हालांकि उन्होंने बातचीत के विवरण साझा नहीं किए। अमेरिकी पक्ष की ओर से भी तत्काल कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं आई और व्हाइट हाउस ने भी प्रतिक्रिया नहीं दी। जिनेवा में हुई कई घंटों की अप्रत्यक्ष वार्ता के बावजूद दोनों पक्षों के बीच कोई समझौता नहीं हो सका। वार्ता में मध्यस्थ की भूमिका निभाने वाले ओमान के विदेश मंत्री बद्र अल–बुसैदी ने कहा कि बातचीत में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। हालांकि, उन्होंने भी विस्तार से जानकारी नहीं दी। आगे की वार्ता का दौर अगले सप्ताह वियना में होगा, जहां अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी का मुख्यालय स्थित है। वार्ता समाप्त होने से ठीक पहले ईरानी सरकारी टीवी ने बताया कि तेहरान यूरेनियम संवर्धन जारी रखने के अपने अधिकार पर अडिग है और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध हटाने की मांग कर रहा है। यह रुख अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की मांगों से अलग माना जा रहा है। ट्रंप की मांग है कि ईरान यूरेनियम संवर्धन, लंबी दूरी की मिसाइल कार्यक्रम पूरी तरह रोके। इसके साथ ही हमास और हिजबुल्लाह जैसे समूहों को समर्थन देना बंद करे। वहीं, ईरान का कहना है कि वह केवल परमाणु मुद्दे पर बात करेगा। अराघची ने एक साक्षात्कार में फिर से चेतावनी दी कि अगर अमेरिका हमला करता है तो क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकाने वैध लक्ष्य माने जाएंगे और इससे व्यापक क्षेत्रीय युद्ध छिड़ सकता है। उन्होंने इसे बहुत डरावना बताते हुए कहा कि ऐसी स्थिति में किसी की जीत नहीं होगी।

क्या इंस्टा किशोरों की आत्महत्या संबंधी सर्च पर माता–पिता को अलर्ट भेजेगा? मेटा की नई नीति पर विवाद

सैन फ्रांसिस्का/कैलिफोर्निया, एजेंसी। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम की मूल कंपनी मेटा ने घोषणा की है कि यदि कोई किशोर उपयोगकर्ता बार–बार आत्महत्या या स्वयं को नुकसान पहुंचाने से जुड़े शब्दों की खोज करता है, तो उसके माता–पिता को स्वतः अलर्ट भेजा जाएगा। यह पहली बार है जब मेटा सीधे तौर पर सर्च गतिविधि के आधार पर अभिभावकों को सूचित करेगा। हालांकि, आत्महत्या रोकथाम संस्था मॉली रोज फाउंडेशन ने इस कदम को खतरनाक और जल्दबाजी में लिया गया निर्णय बताते हुए आशंका जताई है कि इससे स्थिति और बिगड़ सकती है।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
919450482227

अब दमा–दम मस्त कलंदर होगा, अफगानिस्तान को रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ की धमकी, खुली जंग का एलान

इस्लामाबाद, एजेंसी। अफगानिस्तान के हमलों के बाद तिलमिलाए पाकिस्तान ने खुली जंग का एलान कर दिया है। पाकिस्तानी सेना ने अफगानिस्तान के कंधार और काबुल सहित कई प्रमुख शहरों पर बमबारी की। करीब दो घंटे तक चले हवाई हमलों में पाकिस्तान ने 133 अफगान लड़कों को मारने का दावा किया है। इस बीच पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा एम. आसिफ ने तालिबान को सोशल मीडिया पर कड़ी चेतावनी देते हुए उसे भारत का मोहरा तक बता दिया। पाकिस्तान ने ऑपरेशन श्गजब–लिल–हकश में 133 की मौत का दावा किया है। 200 से अधिक घायल हुए हैं। जियो न्यूज के अनुसार इन अभियानों में तालिबान के 27 ठिकाने नष्ट कर दिए गए हैं और नौ ठिकानों पर कब्जा कर लिया गया है।

श्अब दमा–दम मस्त कलंदर होगाश, रक्षा मंत्री की धमकी

अपने एक्स पोस्ट में अफगानिस्तान को धमकी देते हुए पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने खुली जंग का एलान किया। साथ ही ध्मकी भरा बयान जारी करते हुए कहा कि हमारे सब्र का प्याला भर चुका है। अब हमारे और आपके बीच खुला युद्ध छिड़ गया है। अब दमा दम मस्त कलंदर होगा। इतना ही नहीं उन्होंने आगे कहा कि पाकिस्तान की सेना समुद्र पार से नहीं आई है। हम आपके पड़ोसी हैं, हम आपकी हर छोटी–बड़ी बात जानते हैं। तालिबान को लेकर अपने पोस्ट में रक्षा मंत्री ने कहा कि नाटो बलों की वापसी के बाद उम्मीद की जा रही थी कि अफगानिस्तान में शांति होगी और तालिबान अफगान जनता के हितों और क्षेत्र में शांति पर ध्यान केंद्रित करेगा। ख्वाजा ने आरोप लगाते हुए कहा कि उन्होंने (तालिबान) दुनिया भर के आतंकवादियों को अफगानिस्तान में इकट्ठा किया और आतंकवाद का निर्यात शुरू कर दिया। उन्होंने अपने ही लोगों को बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित कर दिया। उन्होंने महिलाओं को इस्लाम द्वारा दिए गए अधिकारों को छीन लिया। रक्षा मंत्री ने पोस्ट करते हुए लिखा– श्नाटो सेनाओं के जाने के बाद उम्मीद थी कि अफगानिस्तान में शांति होगी और तालिबान अफगान लोगों के फायदे और इलाके में शांति पर ध्यान देगा। लेकिन, तालिबान ने अफगानिस्तान को भारत की कॉलोनी बना दिया। उन्होंने दुनिया के सभी आतंकवादियों को अफगानिस्तान में इकट्ठा किया और आतंकवाद का एक्सपोर्ट करना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने ही लोगों को बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित कर दिया। उन्होंने इस्लाम में महिलाओं को दिए गए अधिकार छीन लिए। उन्होंने आगे लिखा– श्पाकिस्तान ने सीधे तरीकों से और दोस्त देशों के जरिए हालात सामान्य रखने की पूरी कोशिश की। उसने पूरी कूटनीति की। लेकिन तालिबान भारत का प्रतिनिधि बन गया। आज, जब पाकिस्तान पर हमला करने की कोशिश हो रही है, अल्हम्दुलिल्लाह, हमारी सेना इस समय जबरदस्त जवाब दे रही है। पहले पाकिस्तान का रोल सकारात्मक रहा है। उसने 50 साल तक 50 लाख अफगानों को पनाह दी है। आज भी लाखों अफगान हमारी जमीन पर अपनी रोजी–रोटी कमा रहे हैं। हमारे सब्र का प्याला भर गया है। अब हमारे और तुम्हारे बीच खुली जंग है। अब यह श्दमा दम मस्त कलंदरश होगा। अंत में उन्होंने लिखा–श्पाकिस्तान की सेना समुद्र पार से नहीं आई है। हम आपके पड़ोसी हैंश्य हम आपके अंदर और बाहर की बातें जानते हैं।

132 साल पुराना डूरंड लाइन विवाद: क्या है पाकिस्तान–अफगानिस्तान के हालिया तनाव की मुख्य वजह?

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान–अफगानिस्तान के बीच गुरुवार को सीमा विवाद बढ़ने के बाद जंग शुरू हो चुकी है। पाकिस्तान ने अफगानिस्तान के खिलाफ ऑपरेशन श्गजब–लिल–हकश शुरू किया, जिसमें काबुल, पक्तिया और कंधार जैसे शहरों में कई सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया गया है। इससे पहले अफगानिस्तान में तालिबान प्रशासन ने दावा किया था कि उसने बड़े पैमाने पर हवाई हमलों में 55 पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया और 19 पाकिस्तानी चौकियों पर कब्जा कर लिया है। गुरुवार को इससे पहले तालिबान बलों ने दोनों देशों के बीच सीमा पर स्थित डूरंड लाइन के साथ तैनात पाकिस्तानी सैनिकों पर हमला किया था, जिसे उन्होंने पहले हुए घातक हमलों का प्रतिशोध बताया था। डूरंड रेखा एक विवादास्पद सीमा बनी हुई है, क्योंकि अफगानिस्तान ने इसे कभी भी औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी है। ऐसे में जानिए आखिर क्या है पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच सीमा विवाद? जिसको लेकर दोनों देश एक दूसरे के खिलाफ खुली जंग में उतर आए हैं। साथ ही पढ़ें ऑपरेशन श्गजब–लिल–हकश से जुड़ी 10 अहम बातें... दरअसल, ब्रिटिश

औपनिवेशिक शासन के दौरान खींची गई विवादित सीमा रेखा श्डूरंड लाइनश समय–समय पर दोनों देशों के बीच गोलीबारी और राजनयिक तनाव का केंद्र बनी हुई है। डूरंड लाइन को लेकर लंबे समय से विवाद जारी है। दोनों देश एक–दूसरे पर हमले और आतंकियों को छिपाने का आरोप लगाते रहते हैं। 2021 में अफगानिस्तान हुकूमत पर तालिबान के नियंत्रण के बाद से तनाव और बढ़ गया है। औपनिवेशिक डूरंड रेखा आज भी पाकिस्तान–अफगानिस्तान के बीच शत्रुता को बढ़ावा दे रही है। 1893 में ब्रिटिश भारत और अफगानिस्तान के बीच सीमा के रूप में खींची गई डूरंड रेखा, पश्तून जातीय क्षेत्रों को दो भागों में बांटती है। अफगानिस्तान ने इसे कभी मान्यता नहीं दी, क्योंकि वह इसे मनमाना थोपा हुआ मानता था। इस दुर्गम भूभाग से होकर गुजरने वाली करीब 2400 किलोमीटर लंबी यह रेखा लंबे समय से उग्रवादियों, नशीले पदार्थों और शरणार्थियों की तस्करी का मार्ग रही है, और दोनों पक्ष एक–दूसरे पर घुसपैठ का आरोप लगाते रहे हैं। पाकिस्तान द्वारा हाल ही में की गई बाड़बंदी (जिसका 90: से अधिक काम 2025 के मध्य तक पूरा हो चुका था) ने झड़पों को जन्म दिया है, क्योंकि तालिबान के रक्षक इस्लामाबाद द्वारा क्षेत्रीय अतिक्रमण का दावा करते हुए बाड़ों को हटा रहे हैं। बता दें कि ब्रिटिश भारत और अफगानिस्तान के बीच डूरंड लाइन समझौता 1893 में हुआ था। डूरंड लाइन अफगानिस्तान के पख्तून समुदाय को दो देशों में बांटती है। अफगानिस्तान हमेशा से इसके विरोध में रहा है। उसने कभी इस डूरंड लाइन समझौता को मान्य नहीं किया। डूरंड लाइन की लंबाई 2430 किमी है, जो कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान के कबायली क्षेत्र से गुजरती है। अफगानिस्तान की मौजूदा सरकार तालिबान इसे मानता नहीं है। साथ ही इस समझौते को खत्म करने की मांग उठाता रहा है। बता दें कि डूरंड लाइन का नाम ब्रिटिश भारत के विदेश सचिव सर हेनरी मोर्टिमर डूरंड के नाम पर रखा गया था, जिन्होंने अफगानिस्तान के अमीर अब्दुर रहमान खान के साथ समझौता किया था। मालूम हो कि यह विवादित लाइन का पश्चिमी सिरा ईरानी सीमा से लगता है, जबकि पूर्वी सिरा चीन की सीमा से सटा है। दरअसल, रूस के दक्षिण की ओर बढ़ते आहत को रोकने के लिए ब्रिटेन ने 1839 में अफगानिस्तान पर हमला किया था, जिसमें ब्रिटिश सेना को हार झेलनी पड़ी। वहीं अब पाकिस्तान पर तालिबान के हमले के बाद खुली जंग का एलान हो चुका है। पाकिस्तान की तरफ से काबुल और कंधार पर बमबारी की गई। पाकिस्तान ने ऑपरेशन श्गजब– लिल–हकश में 133 की मौत का दावा किया है। वहीं अफगानिस्तान ने भी जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी है। अफगान सैनिकों ने सीमा पर हमले तेज कर दिए हैं।

पाकिस्तान का अफगानिस्तान पर पलटवार, धमाकों और विमानों की आवाज से गूंजा काबुल

काबुल, एजेंसी। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में शुक्रवार तड़के तीन जोरदार धमाकों और लड़ाकू विमानों की आवाज सुनाई दी। ये घटनाएं उस समय हुईं जब कुछ ही घंटे पहले अफगानिस्तान ने पाकिस्तान पर जवाबी सैन्य कार्रवाई शुरू की थी। सीमा पार बढ़ते सैन्य तनाव के बीच राजधानी में इन धमाकों ने हालात को और गंभीर बना दिया है। हालांकि, धमाकों की सटीक जगह और किसी संभावित हताहत की तत्काल पुष्टि नहीं हो सकी है। यह

घटनाक्रम ऐसे समय हुआ है जब दोनों पड़ोसी देशों के बीच सीमा पर हालात पहले से ही विस्फोटक बने हुए हैं। अफगानिस्तानी सरकार की तरफ से पाकिस्तान के खिलाफ बड़े सैन्य अभियान का दावा किया गया है। उप प्रवक्ता हमदुल्लाह फितरत ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि खोस्त प्रांत के अलीशेर–तेरेजी जिले में बाबरक पोस्ट के तहत अंजर सर इलाके में स्थित पाकिस्तानी शासन के मुख्यालय पर कब्जा कर लिया गया है। उनके अनुसार इस कार्रवाई में दर्जनों पाकिस्तानी सैनिक मारे गए या घायल हुए हैं और बड़ी मात्रा में हथियार अफगान बलों के हाथ लगे हैं। इसके बाद एक्स पर एक अन्य अपडेट में उन्होंने कहा कि डूरंड लाइन पर व्यापक जवाबी सैन्य अभियान को शुरू किया गया है। यह कार्रवाई 203 मंसूरी कॉर्प्स और 201 खालिद बिन वलीद कॉर्प्स की तरफ से पक्तिया, पक्तिका, खोस्त, कुनर, नूरिस्तान और नंगरहार प्रांतों के कई इलाकों में और टोरखम गेट पर की जा रही है। इस पोस्ट में फितरत की तरफ से दावा किया गया है कि अब तक एक मुख्यालय और 19 चौकियों पर कब्जा किया जा चुका है। चार चौकियां खाली कर दी गईं और उन्हें पूरी तरह जला दिया गया। उनके मुताबिक 55 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए हैं, जिनमें से 23 के शव और कुछ अन्य सैनिकों को जिंदा हिरासत में लिया गया है। इसके अलावा दर्जनों हल्के और भारी हथियार जब्त, एक टैंक नष्ट किया गया और एक इंटरनेशनल हार्वेस्टर वाहन कब्जे में लेने का भी उन्होंने दावा किया है। उप प्रवक्ता के बयान में कहा गया है कि जवाबी सैन्य अभियान अभी जारी है और आगे की जानकारी बाद में दी जाएगी। सीमा के एक अन्य हिस्से तोरखम पर भी दोनों देशों के बीच भारी गोलीबारी की खबर है। अफगान अधिकारियों ने सीमा के पास शरणार्थी शिविर खाली कराए, जबकि पाकिस्तान की ओर भी ग्रामीणों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया। रिपोर्ट्स के मुताबिक, अफगानिस्तान की ओर से दागे गए मोर्टार गोले पाकिस्तान के कुछ गांवों में गिरे, हालांकि नागरिक हताहतों की पुष्टि नहीं हुई है। 2,611 किलोमीटर लंबी सीमा, जिसे डूरंड लाइन कहा जाता है, लंबे समय से विवाद का विषय रही है। अफगानिस्तान ने इसे औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी है। इसी क्षेत्र में हाल के महीनों में कई बार गोलीबारी और झड़पें हो चुकी हैं। इस पूरे घटनाक्रम की शुरुआत रविवार को हुई पाकिस्तानी एयरस्ट्राइक से हुई थी। पाकिस्तान का कहना है कि उसने सीमा पार आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया, जबकि अफगानिस्तान ने दावा किया कि इन हमलों में कई नागरिक, जिनमें महिलाएं और बच्चे शामिल हैं, मारे गए। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ताहिर अंद्राबी ने कहा कि ये सटीक हमले हालिया आतंकी घटनाओं के जवाब में किए गए थे। गौरतलब है कि अक्तूबर में सीमा पर हुई हिंसक झड़पों में दोनों देशों के सैनिकों और नागरिकों की मौत के बाद से पाकिस्तान और अफगानिस्तान के रिश्तों में लगातार कड़वाहट बनी हुई है। 19 अक्तूबर को कतर की मध्यस्थता से युद्धविराम की घोषणा तो हुई, लेकिन तुर्किये के इस्तांबुल में हुई वार्ता किसी ठोस और औपचारिक समझौते तक नहीं पहुंच सकी। दरअसल, 9 अक्तूबर को अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में तहरीक–ए–तालिबान पाकिस्तान (ज्ज्ब) से जुड़े ठिकानों पर हवाई हमले किए गए थे। तालिबान प्रशासन ने आरोप लगाया था कि ये कार्रवाई पाकिस्तान की ओर से की गई।

क्या तालिबान ने मार गिराया पाकिस्तान का एफ–16? वीडियो में जलता दिखा अमेरिकी लड़ाकू विमान का मलबा

काबुल, एजेंसी। पाकिस्तान ने अफगानिस्तान के खिलाफ हवाई हमलों के बाद शुक्रवार को जंग का एलान कर दिया। इस बीच तालिबान ने दावा किया है कि उसने पाकिस्तान का एक अमेरिकी लड़ाकू विमान एफ–16 मार गिराया है। अफगानिस्तान डिफेंस नाम के एक सोशल मीडिया हैंडल ने एक जलते हुए एफ–16 विमान के मलबे का वीडियो साझा किया है। वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि इस लड़ाकू विमान के पिछले हिस्से में एक छोटा पाकिस्तानी झंडा बना हुआ है। इसके साथ ही विमान पर श्85510श नंबर लिखा दिखाई दे रहा है। अमर उजाला इस वीडियो की प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं करता है। बीते कुछ वर्षों में भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान के खिलाफ हवाई लड़ाइयों में दो या दो से ज्यादा पाकिस्तानी एफ–16 विमानों को मार गिराया है। विश्लेषकों का मानना है कि पाकिस्तानी शस्त्रागर का अहम हिस्सा माना जाने वाला एफ–16 लड़ाकू विमान केवल नाम का ही खतरनाक है। यह वीडियो ऐसे समय में सामने आया है, जब पाकिस्तान की ओर से काबुल और कंधार पर हवाई हमले किए गए हैं। पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में आतंकी संगठनों के खिलाफ ऑपरेशन श्गजब–लिल–हकश चलाया है। पाकिस्तान का दावा है कि उसने हमलों में 133 आतंकियों को ढेर किया है। वहीं, इन हमलों के बाद अफगानिस्तान ने भी जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी है। अफगान सैनिकों ने सीमा पर हमले तेज कर दिए हैं। पाकिस्तान ने कहा है कि उसके हवाई हमले गुरुवार रात को अफगान बलों द्वारा पाकिस्तानी सीमा सैनिकों पर किए गए हमले के जवाब में हैं। इन हमलों को तालिबान सरकार ने पहले हुए घातक हवाई हमलों का प्रतिशोध बताया है। पाकिस्तान ने आरोप लगाया है कि अफगानिस्तान ने पाकिस्तान में हमले करने वाले आतंकवादी समूहों के खिलाफ कुछ नहीं किया है, जिसे तालिबान सरकार ने नकार दिया है।

अफगानिस्तान का नया कानून: पत्नी को पीटने पर 15 दिन, जानवरों की लड़ाई पर पांच महीने जेल, यूएन ने जताई गंभीर चिंता

एथेंस, एजेंसी। अफगानिस्तान में तालिबान सरकार ने नया दंड संहिता लागू किया है। इस कानून पर जनवरी में वहां के सर्वोच्च नेता हिबतुल्लाह अखुंदजादा ने हस्ताक्षर किए थे। इस नए कानून में कुल 119 धाराएं हैं और इसमें कई ऐसे प्रावधान हैं, जिन पर संयुक्त राष्ट्र और मानवाधिकार संगठनों ने कड़ी आपत्ति जताई है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस कानून में पत्नी को पीटने पर सजा सिर्फ 15 दिन की जेल रखी गई है, वह भी तब जब पत्नी अदालत में साबित कर दे कि उसे चोट लगी है और शरीर पर कट, घाव या नीला निशान दिखाई दे रहा है। दूसरी ओर, अगर कोई महिला अपने पति की अनुमति के बिना अपने मायके चली जाती है और वहां रुकती है, तो उसे तीन महीने की जेल हो सकती है। इतना ही नहीं, अगर उसके मायके वाले उसे वापस पति के पास नहीं भेजते, तो उन्हें भी सजा दी जा सकती है। संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार प्रमुख वोल्कर तुर्क ने कहा है कि यह कानून अंतरराष्ट्रीय कानूनों के खिलाफ है और महिलाओं के साथ भेदभाव को कानूनी रूप देता है।

यूएन वुमेन की प्रतिनिधि सुसान फर्ग्यूसन ने भी कहा कि इस कानून से पुरुषों को महिलाओं पर अधिकार की स्थिति में रखा गया है और महिलाओं के लिए न्याय पाना और मुश्किल हो जाएगा।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।